हिन्दी आवृत्ति

चैतन्य लहरी

खण्ड - XIII जनवरी-फरवरी-2001 अंक 1 & 2

जो भी करुणा, जो भी प्रेम मैंने आपको दिया है उसे सहेज कर रखें और अन्य लोगों को वो करुणा व प्रेम लौटाएं अन्यथा आप समाप्त हो जाएंगे कहीं के न रहेंगे। स्थायी उन्नति तो तभी होगी जब आप एक ओर से अन्य लोगों को देंगे। अन्यथा आप निस्तेज हो जाएंगे। करुणा बाहर की ओर बहनी चाहिए।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

अबोधिता आत्मा है और आत्मा ही अबोधिता है जिसे कोई भी नष्ट नहीं कर सकता। सहजयोग के माध्यम से अबोधिता को पुनर्स्थापित किया जा सकता है।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
गणेश पूजा कबैला 16.9.2000

आप यदि अपनी आँखों का, अपनी नाक का, अपने कान का सम्मान करने वाले व्यक्ति हैं तो मैं आपको बताती हूँ कि आपके लिए सभी कुछ इतना आनन्ददायी हो जाएगा कि आप हैरान हो जाएंगे।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी
गणेश पूजा कबैला 16.9.2000

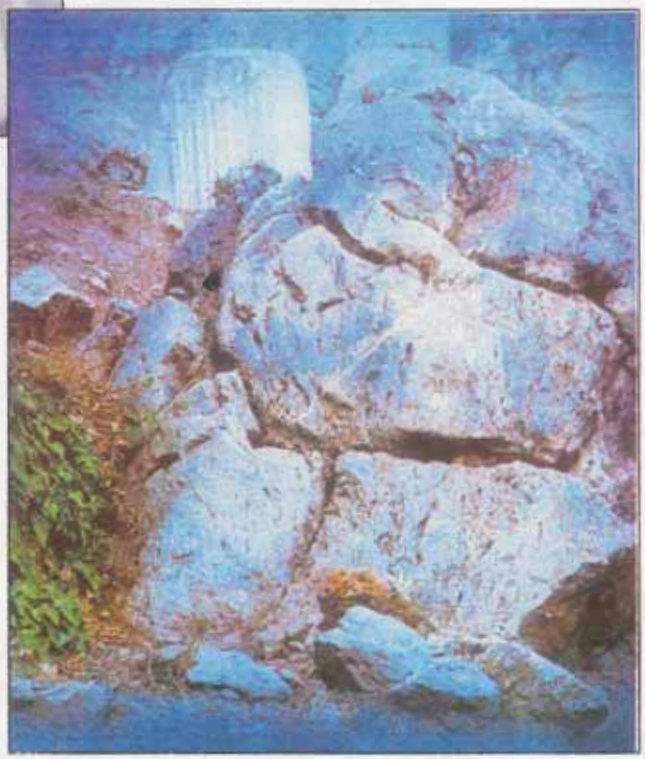

डैल्फी में स्वयंभू श्रीगणेश

इस अंक में

1.	गणेश पूजा - 16.9.2000	3
2.	दिल्ली पब्लिक प्रोग्राम 25.3.2000	15
3.	भूमि पूजन-7.4.2000	24
4.	समर्पण एवं भक्ति का महात्म्य 6 अगस्त 1982	32

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34
फोन : 7184340

गणेश पूजा

कबैला - 16.9.2000

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

(अबोधिता एवं विवाह की पावनता)

आज हम श्री गणेश पूजा करने के लिए एकत्र हुए हैं। जैसे कि आप भली-भाँति जानते हैं, श्री गणेश पावनता एवं पुनीतता के प्रतीक हैं। अत: यह अबोधिता की पूजा है। श्रीगणेश की पूजा करते हुए आपको जानना होता है कि वे अबोधिता की मूर्ति हैं। मैं हैरान होती हूँ कि हम अबोधिता का अर्थ जानते भी हैं या नहीं। अबोधिता एक ऐसा गुण है जो अन्तर्जात है, जिसे किसी पर लादा नहीं जा सकता और न ही जिसका प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

हो सकता है कि आप कहें कि चालाक तथा आक्रामक लोग अबोध व्यक्ति पर आक्रमण करते हैं। परन्तु अबोधिता इतना महान गुण है कि इसे नष्ट नहीं किया जा सकता। यह आत्मा का गुण है। अबोधिता आत्मा का गुण है और जब आत्मा आपके अन्दर जागृत होती है तब आपको अबोधिता का गुण प्राप्त हो जाता है जिसके द्वारा आप सारी नकारात्मकताओं का नियंत्रण कर लेते हैं और उन सभी चीजों पर नियंत्रण कर लेते हैं जो आपके उत्थान तथा आध्यात्मिक सूझ-बूझ के लिए हानिकारक हैं। अत: अबोध बन पाना सम्भव नहीं है। आपको अबोध होना है अर्थात् आपमें अन्तर्जात अबोधिता हो। यह सहजयोग के पश्चात् घटित होता है और आपके अन्दर तथा बाहर विद्यमान सभी बुरी एवं नकारात्मक भावनाओं से लड़ने की आपकी शक्तियां श्री गणेश की माँ द्वारा सुरक्षित हैं तथा उनका आश्रय उन्हें प्राप्त है। आजकल किसी को अबोधिता के विषय में बताना कठिन कार्य है, परन्तु आप ईसा-मसीह के जीवन के विषय में जानते हैं। वह अत्यन्त अबोध थे। वे नहीं जानते थे कि उनके चारों तरफ किस प्रकार के लोग हैं। वे यही समझते रहे कि लोग अबोध हैं। अत: वह उनसे इस प्रकार व्यवहार करते रहे जो कोई चालाक व्यक्ति नहीं कर सकता था। चालाक व्यक्ति दूसरों की चालाकी को एकदम भाँप जाता है और ऐसी बातें कहता है जो अन्य लोगों ने न समझी हों। परन्तु ईसा मसीह ने जो भी कुछ कहा उसमें अबोधिता की चैतन्य लहरियाँ थीं जिन्होंने अन्य लोगों को उचित सोच प्रदान की होगी। तथा उनसे उचित सम्बन्ध भी रखे होंगे। जो भी हो वह समय उनके लिए आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति का न था। परन्तु श्रीगणेश की अबोधिता पराजित नहीं हुई। इसने पावनता एवं सौन्दर्य के ऐसे वातावरण की सृष्टि की जिसे आप ईसामसीह के जीवन में देख सकते हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि आपने विवाहों के विषय में सुना है। विवाह क्यों आवश्यक है? क्यों विवाह होने चाहिए? आजकल तो लोग विवाह के बिना भी रह रहे हैं। परन्तु विवाह का अर्थ है विवाह की पावनता, आपकी शारीरिक, मानसिक तथा भावनात्मक संपूर्णता की पावनता के लिए। पावनता के बिना यदि आप किसी

व्यक्ति के साथ रहते हैं तो वह विवाह अपूर्ण है। उससे जो बच्चे उत्पन्न होंगे वो भी ठीक न होंगे। इसी कारण से विवाह आवश्यक है। जैसा आप जानते हैं ईसा मसीह एक विवाहोत्सव में सम्मिलित होने के लिए गए, क्यों उन्होंने विवाह पर इतना ध्यान दिया? क्योंकि विवाह परस्पर आपके सम्बन्धों को पावनता प्रदान करता है। सभी कुछ ठीक है। परन्तु पति-पत्नी के बीच सम्बन्ध पावन होने आवश्यक हैं अन्यथा उत्पन्न हुए बच्चे कुछ भी बन सकते हैं-धोखेबाज, झूठे, डकैत। विवाह में यदि पावनता नहीं है तो इससे जन्मे बच्चे अत्यन्त क्रूर भी हो सकते हैं। यही कारण था कि वे विवाह की संस्था को पावन करने के लिए गए।

परन्तु ये कहना निहायत मूर्खता है कि उन्होंने शराब बनाई। उन्होंने तो पानी के स्वाद को अंगूर के रस के स्वाद में परिवर्तित कर दिया। हिब्रू भाषा में शराब को (wine) कहते हैं, जिसका अर्थ अंगूर का रस भी होता है। शराब तुरन्त नहीं बनाई जा सकती। सड़ाने के लिए इसमें समय लगता है। काफी समय तक इसे सड़ाना पड़ता है तब कहीं जाकर शराब बनती है। ईसा मसीह ने कहीं इतने सहज ढंग से जल का स्वाद परिवर्तित कर दिया तो भी यह नशा प्रदान करने वाली शराब कैसे हो सकती थी? इसाई धर्म में बहुत सारे लोगों का यह विश्वास है कि ईसा मसीह ने शराब को पावन कर दिया है। यह धारणा बिल्कुल गलत है। उन्होंने शराब को कभी पावन नहीं किया। जल का स्वाद उन्होंने अंगूरों के रस सा बना दिया था। उस दिन मैं एक व्यक्ति से मिली उसने कहा कि श्री माताजी मुझे आत्मसाक्षात्कार दे दो। मैंने कहा ठीक है थोड़ा सा पानी लाओ। वे थोड़ा सा जल लाए। मैंने अपनी अंगुलियां उसमें डालीं और उसके बाद उन्होंने जल को चखा तो कहने लगे कि श्रीमाताजी इसका स्वाद तो वाइन जैसा है। मैंने कहा ईसा ने भी ऐसा ही किया था। अत: शराब में पावनता नहीं है। कोई भी ऐसी चीज बनाने की आशा आप ईसा मसीह से कैसे कर सकते हैं जिससे आपकी चेतना चली जाए? शराब पीने वाले लोग सामान्य नहीं होते उनके मस्तिष्क में खराबी आ जाती है। गाड़ी चलाते हुए भी वे समस्याएं उत्पन्न करते हैं। उनसे बातचीत करते हुए भी आप समझ सकते हैं कि वे असामान्य हैं। कभी तो वो बहुत आक्रामक होते हैं और कभी अत्यन्त निश्चेष्ट। प्राय: वे बहुत आक्रामक होते हैं और उनका आचरण मानवीय नहीं होता। तो आपको ये समझना अत्यन्त आवश्यक है कि इतने लम्बे समय तक सड़ाई गई शराब हानिकारक है और आध्यात्मिक जीवन के विरुद्ध। जिन देशों में शराब को पावन माना जाता है वे पतन की ओर जा रहे हैं। ये लोग श्री गणेश तथा अबोधिता विरोधी हैं। ऐसे लोग अत्यन्त चालाक, धूर्त तथा अन्य लोगों पर रौब झाड़ने वाले हो सकते हैं। वे सभी प्रकार की बुराइयों के कारण बन सकते हैं। शराब की लत में फंसे व्यक्ति पर विश्वास नहीं किया जा सकता। ऐसा व्यक्ति अपने बीवी, बच्चों तथा किसी भी अन्य व्यक्ति के पीछे पड़ सकता है तथा उनके जीवन को नष्ट कर सकता है क्योंकि वह जानता है कि वो स्वयं तो नष्ट हो ही चुका है। तो विशेष बात, जो व्यक्ति को समझनी होती है वो ये है कि अबोधिता किसी भी ऐसी चीज की आज्ञा नहीं देती जो चेतना

विरोधी हो। **मानवीय चेतना महत्वपूर्णतम है। इसका सम्मान होना ही चाहिए।** आपके स्वास्थ्य या चेतना को बिगाड़ने वाली कोई भी चीज गलत है। विशेषतौर पर सहजयोगियों के लिए आपको अपना स्वास्थ्य ठीक रखना होगा। अपने स्वास्थ्य को आप किस तरह ठीक रख सकते हैं? हानिकारक सभी चीजों को दूर रखकर। अत: विवाहित जीवन अत्यन्त पवित्र जीवन है। इसे आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं। वैसे तो पादरी भी हैं परन्तु सहजयोग में तो मैं स्वयं विवाहित लोगों को आशीर्वादित करती हूँ। अत: व्यक्ति को समझना चाहिए कि उसे कितना बड़ा वरदान मिला है। फिर भी ऐसे बहुत से लोग हैं जो आकर कहते हैं श्रीमाताजी हमें तलाक लेना है। हम अच्छा विवाह करने का प्रयत्न कर रहे हैं। वे सभी प्रकार की कहानियां बताते हैं। जब आप जानते हैं कि ये पावन विवाह है जो कि सहजयोग की विधियों के अनुसार हो रहा है तो ये खराब किस प्रकार हो सकता है? परन्तु यदि आप स्वयं ही खराब हैं तो कुछ नहीं हो सकता। विवाह के विषय में यदि आपके अटपटे विचार हैं तो इन्हें ठीक करने का प्रयत्न करें। यदि आप सहजयोग में विवाह करना चाहते हैं तो निश्चय करें कि आप सहज विवाह की पावनता का सम्मान करेंगे।

मैं जानती हूँ कि पुरुष हो या महिलाएं, कभी-कभी बुरे हो सकते हैं। समस्याएं हो सकती हैं। परन्तु विवेकशील व्यक्ति इन सब चीजों को सहन करता है क्योंकि वह सहजयोग विवाह की पावनता का सम्मान करता है। यह कहना अन्तर्विरोध है कि ईसामसीह तथा श्रीगणेश की माताओं ने बिना विवाह के उन्हें जन्म दिया। वे तो स्वयं पावनता हैं। बाह्य पावनता की उन्हें कोई आवश्यकता नहीं। वे अबोध हैं और अबोध लोगों को किसी प्रकार के कर्मकाण्ड की कोई आवश्यकता नहीं। इस प्रकार से इनका जन्म हुआ। पूर्ण अबोध रूप में। परन्तु इसका अर्थ ये नहीं है कि हम अपना मुकाबला उनसे करें। वे दिव्य-अवतरण थे और उन्हें इसी प्रकार जन्म लेना था। परन्तु हमें पावन होना है तथा पावनता से परिपूर्ण जीवन बिताना है। एक अवतरण तथा मानव में यही अन्तर है। अवतरणों की आलोचना करना बहुत सुगम है। मानव ने सभी अवतरणों की आलोचना की क्योंकि मनुष्य उन्हें समझ नहीं सकते। आप यदि वास्तव में अत्यन्त पावन एवं अबोध बनने का प्रयत्न करें तो आप समझ पाएंगे कि आपके जीवन भिन्न स्तर पर क्यों हैं। अब यदि आप कहें कि श्रीमाताजी हम अबोधिता विकसित कर सकते हैं तो आप नहीं कर सकते। अबोध बनने का क्या तरीका है? **सहजयोग में अबोध बनने की उपयुक्त विधि है। हमारी निर्विचार-चेतना से अबोधिता विकसित होती है। जब आप निर्विचार चेतना में होते हैं तो क्या होता है? तब आप प्रतिक्रिया नहीं करते और न ही गलत चीजों में लिप्त होते हैं। तब आप किसी प्रकार के वाद-विवाद या बहस मुवाहिसे में नहीं फँसते। चीजों को केवल देखते हैं और आपमें अन्तर्निहित अबोधिता अत्यन्त सुन्दरता पूर्वक जागृत होती है, बिल्कुल वैसे ही जैसे गन्दे पानी के तालाब से कमल खिलता है।**

तो हालात चाहे जो भी हों यदि आप निर्विचार चेतना की अवस्था में हैं तो आप प्रतिक्रिया नहीं करते। **प्रतिक्रिया न करना**

अबोधिता की निशानी है। प्रतिक्रिया न करने वाले लोग युवा बने रहते हैं। उनकी आयु नहीं झलकती। वे युवा ही बने रहते हैं। प्रतिक्रिया करना अच्छी बात नहीं है क्योंकि इससे आप अन्य लोगों में लिप्त हो जाते हैं। यदि आप प्रतिक्रिया नहीं करते तो आप केवल साक्षी होते हैं, किसी भी चीज़ में लिप्त नहीं होते। लिप्सा से आप दूर रहते हैं और इस प्रकार आपकी अबोधिता बढ़ती है और आप अत्यन्त आत्मविश्वस्त हो जाते हैं।

चीन के एक राजा की कहानी मैंने पढ़ी थी जो एक सन्त के पास गया और उससे कहा कि मुझे तुम्हारी सहायता चाहिए। मैं अपने बेटे का विकास इस प्रकार चाहता हूँ कि वह सभी समस्याओं का सामना कर सके। लोग जो चाहे करते रहें वह उनका सामना करने के योग्य बन जाए। ठीक है आप अपने बेटे को मेरे पास छोड़ दें, सन्त ने कहा। जब प्रतिस्पर्धा शुरू हुई तो उसका बेटा अखाड़े में पूर्ण-निर्विचारिता की स्थिति में सबको देखते हुए अडोल खड़ा रहा। उसे देखकर सभी लोग अखाड़े से लौट आए और उस छोटे से लड़के की अबोधिता का सामना न कर सके। राजा आश्चर्यचकित था कि किस प्रकार उसके बेटे ने लोगों की आक्रामकता, उनके तर्कों तथा आक्रामकता को सहन किया। कोई यदि आपसे कुछ कहे तो आपको पूर्णत: अबोध बने रहना चाहिए। तब अबोधिता की आपकी शक्ति दर्शाएगी कि रौब झाड़ने वाला ये व्यक्ति जो आपको कष्ट दे रहा है गलती पर है। और वह व्यक्ति स्वयं भी महसूस करेगा कि इस व्यक्ति पर मैं इतना दबाव डालने की कोशिश कर रहा हूँ फिर भी ये निश्चिंत है। तब वह स्वयं को अत्यन्त दुर्बल पाएगा क्योंकि दूसरों पर प्रभुत्व जमाने की शक्ति उसमें नहीं है।

सहजयोगी होने के नाते अब हम निर्विचार चेतना की अवस्था में जा सकते हैं। अपनी प्रतिक्रियाओं को कम करें, किसी भी चीज़ के प्रति प्रतिक्रिया को। अपने विषय में लोगों के इतने अजीबोगरीब विचार होते हैं कि वे प्रतिक्रिया करते हैं। उदाहरण के रूप में किसी ने मुझे ये गलीचे दिखाए। मैं बहुत प्रसन्न हुई। उन्होंने मुझे बताया कि सभी सहजयोगियों ने अपने हाथों से इतने सुन्दर गलीचे बनाए हैं। ये जानकर मुझे बहुत हर्ष हुआ कि उन लोगों ने ये कार्य किया। मैं यदि आम लोगों जैसी होती तो मैंने कहा होता, 'हे, परमात्मा क्या रंग है, क्या चीज है! आदि आदि।' तो जो कुछ उन्होंने किया है मैं उसका आनन्द भी न ले पाती, आनन्द नाम की चीज़ खो जाती।

बच्चा पूर्ण आनन्द लेता है। जो भी कुछ वो देखता है उसका आनन्द लेता है। हर चीज़ को वह आनन्ददायी बना लेता है। बच्चों को देखें, मैंने देखा है कि बच्चों को जो भी कुछ मिलता है उसका खिलौना बना लेते हैं। उस दिन हम जिनोवा गए और वहाँ पर बड़े-बड़े अवरोध लगे देखे। कहीं से कुछ बच्चे आए और उन पर चढ़के उन्हें घोड़ा बना लिया और आनन्द लेने लगे। जो भी कुछ बच्चों को मिलता है, कोई भी स्थान उन्हें मिलता है, उसका वे खिलवाड़ बना लेते हैं। हर चीज़ उनके लिए एक खेल है। उनके लिए जीवन भी एक आनन्ददायी खेल है-केवल आनन्द की एक वस्तु। बच्चे आपको भी हर चीज़ का आनन्द लेने के लिए विवश कर देते हैं। आपका मिजाज़ यदि ठीक न हो तो

बच्चे आपसे इस प्रकार व्यवहार करते हैं कि आपको मिजाज ठीक करके अत्यन्त सहज एवं स्वाभाविक बनना पड़ता है। किसी भी सीधे-सच्चे व्यक्ति को जब आप देखते हैं तो आप कहते हैं कि वे बच्चों जैसे हैं वह चालाकी को तो समझते ही नहीं। लोगों की धूर्तता को वे बिल्कुल नहीं समझते अपनी अबोधिता के संसार में रहते हैं। इसी प्रकार सभी सहजयोगियों को अपने चहुँ ओर अबोधिता का परिमल (Aura) विकसित करना होगा। लोग देख सकें कि आप कितने अबोध हैं, कितने मधुर हैं। कोई वाद-विवाद नहीं, कोई लड़ाई-झगड़ा नहीं केवल निर्विचार चेतना की अवस्था का आन्तरिक सन्तोष है। बहुत से लोग कहते हैं कि श्रीमाताजी हम निर्विचार हो ही नहीं सकते। क्यों? क्यों आप निर्विचार नहीं हो सकते? क्योंकि जब भी किसी चीज को आप देखते हैं आप प्रतिक्रिया करना चाहते हैं। **शनैः शनैः आप प्रतिक्रिया करना बन्द कर दें अर्न्तमनन करें और स्वयं प्रतिक्रियाओं को देखें और अपने मस्तिष्क से सुधरने के लिए कहें तो ये कार्य हो सकता है।** कोई प्रतिक्रिया यदि है तो कुछ भी न कहें, शान्त रहें। शनैः शनैः, आप हैरान होंगे कि, आप किस प्रकार निर्विचार चेतन हो गए हैं। आप देखेंगे कि आप कितने भिन्न हैं। आम लोगों जैसे आप नहीं हैं। परन्तु यदि गली में झगड़ा हो रहा हो तो आम आदमी की प्रतिक्रिया ये होती है कि इसका वह एक भाग बनना चाहता है। वे भी झगड़ा करना चाहते हैं, उस लड़ाई-झगड़े का अंग-प्रत्यंग बनना चाहते हैं। इससे दूर नहीं होना चाहते। ऐसे समय पर, यदि आपमें अबोधिता है तो वह कार्य करेगी। मैंने आपको बताया है कि **अबोधिता आत्मा है और आत्मा ही अबोधिता है जिसे कोई भी नष्ट नहीं कर सकता। सहजयोग के माध्यम से अबोधिता को पुनर्स्थापित किया जा सकता है।** हो सकता है कि आप अत्यन्त आक्रामक व्यक्ति हों, अत्यन्त दुखी हों या हर समय अन्य लोगों को तंग करने वाले व्यक्ति हों। ऐसा सम्भव है। परन्तु सहजयोग में आने के पश्चात् अपने व्यक्तित्व को आप इतना सुन्दर एवं मधुर बना सकते हैं कि ने केवल आप परन्तु अन्य लोग भी इसका आनन्द ले सकते हैं। ये अबोधिता पूर्ण सच्चा विवेक है। किसी मकसद के लिए यह कार्य नहीं करता, यह निर्बाज्य है। पूर्ण निस्वार्थ होने के कारण यह आनन्द की ऊंचाइयों को प्राप्त कर लेता है क्योंकि किसी भी चीज में इसका कोई भी स्वार्थ नहीं होता। सभी प्रकार के प्रयत्नों की सारहीनता को ये देख लेता है। लोग इधर-उधर क्यों दौड़े फिर रहे हैं? वे क्यों लड़ रहे हैं? इन सब चीजों का वह आनन्द लेता है। खड़े होकर वह देखता है कि लोग यह सब पसन्द क्यों नहीं करते।

कुछ लोग सोच सकते हैं कि वे ठीक हैं उनमें कोई कमी नहीं है, परन्तु वास्तविकता ये नहीं है। जैसा मैंने बताया अबोधिता अन्तर्जात गुण है। स्वयं को अबोध मानकर आपको स्वयं को धोखा नहीं देना चाहिए। इसके विपरीत अन्तर्दर्शन करें और स्वयं देखें कि अन्य लोगों के साथ मैं अभी तक क्या करता रहा। आपका दृष्टिकोण क्या है। भावनात्मक विवेक के विषय में मैं आपको पहले ही बता चुकी हूँ। भावनात्मक विवेक ही अबोधिता की अभिव्यक्ति है। यही श्रीगणेश की अभिव्यक्ति है। जिन बच्चों को ये

आशीर्वाद प्राप्त है वह सदैव आपको प्रसन्न करने का प्रयत्न करेंगे। वे जानते हैं कि आप क्या चाहते हैं, आपकी जरूरत क्या है। जो आनन्द आप चाहते हैं वे आपको प्रदान करेंगे। आपको प्रसन्न करने के लिए वे केवल वही कार्य करेंगे जो आप चाहते हैं। उनकी अपनी कोई इच्छाएं नहीं होती, उनकी कोई माँगे नहीं होती, वे कभी नहीं कहते मैं ये चाहता हूँ, तुम मेरे लिए ऐसा करो, कभी नहीं। वे केवल आप ही की इच्छाओं को देखना चाहते हैं और आपकी जरूरतों को पूरा करने के लिए पूर्ण प्रयत्न करते हैं। अन्य लोगों तथा बड़ों के प्रति बच्चों के व्यवहार को देखना बहुत ही दिलचस्प है। मानो कोई महान सूझ-बूझ वाले बड़ी आयु के व्यक्ति हों।

अत: अबोधिता में आप अत्यन्त विकसित तथा परिपक्व हो जाते हैं। अत्यन्त परिपक्व। इस परिपक्वता से आप जान जाते हैं कि इस व्यक्ति को क्या आवश्यकता है और दूसरे व्यक्ति को क्या नहीं मिलना चाहिए और उनके स्थापित होने का ढंग बहुत ही दिलचस्प होता है। मेरे विचार से बच्चे संसार की सबसे दिलचस्प चीज़ हैं। मुझे गुलाब बहुत सुन्दर लगते हैं परन्तु बच्चे उनसे भी सुन्दर हैं। वो आपको इतना कुछ सिखाते हैं कि उनकी अबोधिता को देखकर आप दंग रह जाते हैं। बच्चों के विषय में बहुत से चुटकुले हैं। किस प्रकार वे आचरण करते हैं, किस प्रकार बातचीत करते हैं। अपनी अबोधिता में वे किसी को भी सबकुछ बता देते हैं। कुछ भी छिपाना वे नहीं जानते। मुझे एक चुटकुला याद है। एक बार एक व्यक्ति किसी के यहाँ खाना खाने के लिए आया। उनका बच्चा बड़ी गम्भीरता से उस व्यक्ति की ओर देख रहा था। वह कहने लगा माँ, जैसा आपने मुझे बताया था, ये तो घोड़े की तरह से नहीं खाते। सभी को बड़ा आघात लगा। सम्भवत: माँ ने उसे बताया होगा कि वह व्यक्ति घोड़े की तरह से खाता है। तो बच्चे इतने अबोध होते हैं कि उनकी बातों से आपका भेद खुल जाता है। बच्चों के बारे में बहुत से चुटकुले हैं। यदि आप इन चुटकुलों की पुस्तक लिखें तो लोगों को बहुत आनन्द आएगा। बच्चे सारी सच्ची बातों को अत्यन्त अबोधिता पूर्वक कह देते हैं। वे झूठ नहीं बोलते। वे बहुत सच्चे होते हैं। अबोधिता का यही गुण है। बच्चे झूठ नहीं बोलते। उनसे यदि पूछो कि तुमने ये कार्य किया तो तुरन्त बताएंगे कि हां मैंने किया। तुमने ये कार्य नहीं किया तो वो कहेंगे नहीं मैंने ये कार्य नहीं किया। कभी झूठ नहीं बोलेंगे। बड़े लोग ही उन्हें सिखाते हैं किस प्रकार झूठ बोलना है, किस प्रकार धोखा देना है? एक अन्य बुरी चीज़ जो हम बच्चों को सिखाते हैं, विशेष रूप से पश्चिम में, वह है उन्हें बताना कि सभी कुछ तुम्हारे पास होना चाहिए। लोग बच्चों से कहते हैं कि यह चीज़ तुम्हारी है। किसी और को मत देना, ये तुम्हारी अपनी है। इसके विपरीत हमें उनसे कहना चाहिए कि तुम इसका जो चाहे करो। ये बात उनकी अबोधिता पर छोड़ दो। आपको देखकर हैरानी होगी कि वे अपना सभी कुछ बांट देंगे। उनका व्यवहार इतना सुन्दर होगा कि आप हैरान रह जाएंगे कि किस प्रकार वे सभी को प्रसन्न करने तथा आनन्द देने का प्रयत्न करते हैं! ये सब करने की उनकी योग्यता अद्‌भुत है। इसे देखकर व्यक्ति को हैरानी होती है कि इन नन्हें बच्चों ने किस प्रकार ये योग्यता

पा ली।

यह श्रीगणेश का आशीर्वाद है कि बच्चे इतने मधुर, सुन्दर एवं आनन्ददायी हैं। बच्चों सम बनने का प्रयत्न करें। आपको उन्हीं सम बनना होगा। हो सकता है आपने बहुत सी पुस्तकें पढ़ी हों, बहुत सी उपाधियाँ प्राप्त की हों। हो सकता है आप कोई महान चीज हों परन्तु आप बाल सुलभ नहीं हैं। आपको बाल सुलभ होना होगा। अन्यथा कोई आपकी संगत पसन्द नहीं करेगा। ऐसे लोगों को हम उबाऊ कहते हैं। मैं तो सोचती हूँ कि अबोधितारहित लोग ही ऊबते हैं। वे आपको बताने का प्रयत्न करते हैं कि आपको ऐसा अवश्य करना चाहिए। यदि आपने सफल होना है तो ऐसा करें। बच्चों के लिए ये सब भाषण बेकार हैं। आपको भी ये बात समझ लेनी चाहिए कि ये फिजूल की बात कर रहे हैं। जिस प्रकार बच्चों को यदि अप्रिय या भयंकर बनने को कहा जाए तो वे उस बात की चिन्ता नहीं करते उसी प्रकार आप भी यदि अबोध हैं तो कोई गलत चीज स्वीकार नहीं करेंगे। आप कुछ भी सुनें, कोई कुछ भी कहे, आप पर कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे आप स्वीकार नहीं करते, आप वैसा नहीं करते। आप ऐसा कर ही नहीं सकते क्योंकि अबोधिता आपकी रक्षा करती है। उपयुक्त रूप से ये आपका पथ प्रदर्शन करती है कि आपको क्या करना है, क्या नहीं करना। अन्तर्दर्शन करके देखें कि आप अबोध हैं या नहीं। लोग सोचते हैं कि कोई उन्हें नियंत्रित करने का या हानि पहुँचाने का प्रयत्न कर रहा है या उन्हें नीचा दिखाना चाह रहा है अबोधिता को कोई नीचा नहीं दिखा सकता।

अबोधिता एक ऐसा गुण है जो सभी प्रकार की मूर्खता, वृद्धावस्था, स्वास्थ्य, मस्तिष्क और सोच-विचार से ऊपर है। आपकी भावनाएं यदि अत्यन्त अबोध हैं तो आप अत्यन्त आनन्द में रहते हैं। आजकल निर्लज्जता की पराकाष्ठा है। मैंने देखा है कि लोगों में बिल्कुल भी लज्जा नहीं है। मेरी समझ में नहीं आता कि कुछ महिलाएं पुरुषों को आकर्षित करना चाहती हैं और कुछ पुरुष महिलाओं को। बच्चे कभी ऐसा नहीं करते। वे नहीं जानते कि पुरुषों या महिलाओं को आकर्षित करना क्या होता है। वो कुत्तों को, घोड़ों को प्रसन्न करना चाहेंगे परन्तु किसी व्यक्ति को आकर्षित करने के लिए जाते हुए मैंने उन्हें कभी नहीं देखा। कारण ये है कि उनका आत्मसम्मान पूर्ण है, अपने विषय में वे भली-भांति जानते हैं। उन्हें पुरुषों या महिलाओं के पीछे दौड़कर अपने लिए समस्याएं खड़ी करने की क्या आवश्यकता है।

उनका आत्मसम्मान पूर्ण है। वे आपको पूर्ण आत्म सम्मान प्रदान करते हैं। न आप किसी के सम्मुख झुकते हैं और न ही किसी को अपने सम्मुख झुकने के लिए मजबूर करते हैं। अबोधिता का यही सौन्दर्य है कि यह आपके अन्दर अत्यन्त भली भांति कार्य करता है। यही कारण है कि मैं हमेशा कहती हूँ कि श्रीगणेश की पूजा करो। मैं एक व्यक्ति को जानती हूँ जो बहुत ऊँचे पद पर थे परन्तु अचानक उन्हें पक्षाघात हो गया। ये क्या हुआ? वो तो बहुत अच्छे व्यक्ति थे, उन्हें कैसे पक्षाघात हो गया? तब मुझे पता चला कि औरतों के प्रति उनकी बुरी नीयत थी, जिसके कारण उन्हें यह समस्या हो गई।

तो मैंने सोचा कि श्रीगणेश की पूजा ही बेहतर है। श्रीगणेश की पूजा करें। श्रीगणेश की

पूजा करने से आपका मूलाधार ठीक होगा। लज्जा, विवेक, गरिमाभाव तथा आत्मसम्मान ठीक होगा। ऐसे वस्त्र धारण करें जिनसे प्रतीत हो आप अपने शरीर का सम्मान करते हैं। इस प्रकार बातचीत करें जिससे पता चले कि आप अपनी जिह्वा का, अपनी भाषा का सम्मान करते हैं। आप यदि सहजयोगी हैं तो आपकी भाषा अश्लील नहीं होगी। आपका मस्तिष्क इतना अपवित्र नहीं हो सकता जो गाली दे और बुरे शब्द कहे। अमरीका में मैंने देखा है कि लोग इतने बेढबे ढंग से बातचीत करते हैं कि आप भौचक्के रह जाते हैं। अपने मन की बात कहने के लिए अश्लील शब्दों का या गन्दे शब्दों का उपयोग आवश्यक नहीं है। इससे आपकी जिह्वा खराब होती है और जिह्वा से अबोधिता चली जाती है। आपकी जिह्वा से अबोधिता यदि बिल्कुल चली गई तो आपकी कही हुई बात कभी सत्य न होगी, वह कभी सत्य न होगी।

परन्तु यदि आप अबोध हैं, आपकी जिह्वा पवित्र है तो जो भी कुछ आप बोलेंगे वह सत्य हो जाएगा। अत: हर प्रकार से अबोधिता का सम्मान किया जाना मूल चीज है। आपने कभी किसी से नाराज भी होना हो तो सबसे बढ़िया तरीका है कि शान्त रहें चुप रहें अपनी जिह्वा का सम्मान करें। कुछ लोगों में आँखें मटकाने की बहुत बुरी आदत होती है। हर समय औरतों की ओर देखते रहते हैं। कुछ औरतें भी ऐसी ही होती हैं। वे अपनी आँखों का सम्मान नहीं करती। उन्हें न केवल आँखों के रोग हो जाते हैं बल्कि मस्तिष्क की समस्या भी हो जाती है। इस प्रकार के व्यवहार से मस्तिष्क ऐसा बिगड़ जाता है कि चीजों का आनन्द लेने का विवेक इसमें नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति किसी चीज का आनन्द नहीं लेता। **आप यदि अपनी आँखों का, अपनी नाक का, अपने कान का सम्मान करने वाले व्यक्ति हैं तो मैं आपको बताती हूँ कि आपके लिए सभी कुछ इतना आनन्ददायी हो जाएगा कि आप हैरान हो जाएंगे।** विश्व में आनन्द उठाने के लिए बहुत सी चीजें हैं परन्तु लोग किसी अच्छी चीज को सुनने में असमर्थ होते हैं। चहचहाते हुए पक्षियों का संगीत उन्हें सुनाई नहीं देता। बढ़ते हुए पेड़ों, खिलते हुए फूलों तथा उनकी सुगन्ध को न वो देख सकते हैं न सूँघ सकते हैं। आत्म सम्मान के स्तर का बहुत नीचा होना इसका कारण है। क्योंकि वे बहुत तुच्छ लोग हैं जो अपने आस-पास की सभी चीजों का आनन्द लेते हैं। ये सारी चीजें तो व्यक्ति के आनन्द का स्रोत होनी चाहिए। बच्चों की ओर देखें, वे किस प्रकार आनन्द के स्रोत हैं? मंच पर आकर कोई यदि दौड़ता है तो किस प्रकार हम उसका आनन्द लेते हैं। क्यों? बच्चे को दौड़ते हुए देखकर हमें क्यों अच्छा लगता है। बच्चे को दौड़ते हुए देखकर हम कभी नहीं कहते कि वो पगला गया है या शराब पिए हुए है। इसके विपरीत बच्चे के दौड़ने से हमें आनन्द आता है। क्यों? बच्चे का माधुर्य, उसकी अबोधिता, जो कि उसकी शक्ति है, उसी के कारण वह इतना मधुर, इतना सुन्दर प्रतीत होता है कि हमारे हृदय में सच्चा आनन्द भर जाता है।

अत: दूसरी बात ये है कि अबोधिता आनन्ददायी है। अबोधिता से लोगों को आनन्द मिलता है। अबोधितापूर्वक किया गया काम या कही गई बात अत्यन्त आनन्ददायी होती है। ऐसा

व्यक्ति अत्यन्त सुन्दर एवं पारदर्शी होता है। उसकी पारदर्शिता आनन्ददायी होती है तथा अत्यन्त पवित्र। यही कारण है कि श्रीगणेश की पूजा सर्वप्रथम होती है। आदिशक्ति ने सर्वप्रथम श्रीगणेश देव का सृजन किया। क्योंकि सृजन करते हुए उन्हें देखना होता है कि सृजित देवता में अबोधिता की शक्ति हो। अन्यथा लोग भटक जाएंगे और सभी प्रकार के कुकृत्य करेंगे। इसलिए सर्वप्रथम उन्होंने श्री गणेश का सृजन किया जिनके पावित्र्य को आप चैतन्य लहरियाँ भी कह सकते हैं। ये चैतन्य लहरियाँ इतनी शक्तिशाली हैं कि हर चीज़ का नियन्त्रण करती हैं। नि:सन्देह ऐसे लोग भी हैं जो अपनी अबोधिता को बिल्कुल त्याग देते हैं और स्वयं का कोई अन्त नहीं समझते। उन्हें बिल्कुल भुला दें। सामान्यत: उनकी अबोधिता ही उनका पथप्रदर्शन करेगी। आपको चाहे इस बात का ज्ञान हो चाहे न हो, यह इतनी मधुर चीज़ है कि यह लोगों को उनकी श्रेष्ठता व महानता मे उतारती है। सहजयोगी के रूप में हमने भी अपने अन्दर यही गुण विकसित करने हैं। सहजयोगी कहीं भी जाए, कोई भी कार्य करने का प्रयत्न करे, किसी भी व्यक्ति से मिले, कोई भी सामाजिक कार्य करे, आपके अन्तर्निहित आनन्द का आभास लोगों को होना चाहिए। केवल इसी आनन्द के लिए श्रीआदिशक्ति ने श्री गणेश का सृजन किया। क्योंकि यह आन्तरिक आनन्द, यह अबोधिता किसी को हानि नहीं पहुँचा सकते। यह किसी चीज़ की आशा नहीं करती, किसी चीज़ की माँग नहीं करती, कुछ भी नहीं चाहती। सर्वत्र केवल आनन्द का प्रसार करती है। आपका व्यक्तित्व भी ऐसा ही होना चाहिए। अच्छी वेशभूषा पहनने से, अच्छा खाना खाने में, अच्छी बातचीत करने में कोई बुराई नहीं है। परन्तु इन सभी बातों में अबोधिता के प्रति सम्मान और अबोधिता की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। इस अबोधिता से हम समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। विश्व की सभी समस्याओं का समाधान अबोधिता से हो सकता है। यही कारण है कि श्री गणेश बहुत महत्वपूर्ण है। आपका श्री गणेश तत्व यदि दुर्बल है तो न जाने आपके साथ क्या हो जाए! आप जानते हैं कि आजकल बहुत सी भयानक बीमारियाँ हो रही हैं, क्योंकि लोग पवित्र नहीं हैं, उनके सम्बन्ध पवित्र नहीं हैं।

आपकी अबोधिता द्वारा सभी सम्बन्ध पवित्र होने चाहिए। जैसे आपकी बहन है, माँ है, भाई है, पिता हैं। आपके सभी सम्बन्ध इतने सुन्दर और पवित्र हैं क्योंकि आपके रिश्ते अबोधिता के हैं।

आप अपने पिता से, बेटी से, माँ से अबोधिता वश प्रेम करते हैं क्यों आपको प्रेम करना चाहिए। किसी पर प्रभुत्व जमाने के लिए यदि आप ऐसा करते है तो ये चालाकी है। प्रेम तो केवल प्रेम के लिए होना चाहिए (निर्व्याज्य)।

तो अब मैं प्रसन्न हूँ। कल आप लोगों के विवाह होंगे और जिनके विवाह होंगे उन्हें समझना चाहिए कि ये विवाह बहुत ही पवित्र हैं। बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह किसी अन्य विवाह की तरह से नहीं है। यह विवाह मेरे सम्मुख हो रहे हैं अत: सावधान रहें। आप यदि विवाह नहीं करना चाहते तो न करें। अपने भावी साथी को समझने का अवसर आपको दिया गया है। परन्तु विवाह के पश्चात यदि आप इसमें दोष खोजेंगे तो मेरे लिए भी कठिनाई होगी और आपके लिए

भी। ये भी हो सकता है कि मैं विवाह करवाने बन्द कर दूँ। अत: हम लोगों को पहले दिन से ही तलाक की बातें करने की आज्ञा नहीं देते। परन्तु वास्तव में यदि कोई समस्या है तो हमने सहजयोग में तलाक की आज्ञा भी दी है। कैथोलिक चर्च तलाक की आज्ञा नहीं देता। यही कारण है कि पुरुष और महिलाएं, इधर-उधर, उल्टे-सीधे सम्बन्ध बनाते हैं। यहाँ पर ऐसा नहीं है। परन्तु यह अत्यन्त अबोध घटना होनी चाहिए। आपके पावित्र्य को यदि चुनौती दी जा रही है और इस कारण से यदि आप तलाक लेते हैं तो ठीक है। इस बात से मैं सहमत हूँ। ऐसी स्थिति में आपको तलाक ले लेना चाहिए। अत: अपने पावित्र्य को बनाए रखें। आधुनिक काल में अपने पावित्र्य को बनाए रखना बहुत महत्वपूर्ण है ताकि आपके अन्दर तथा अन्य लोगों के अन्दर श्री गणेश जागृत हो सकें। यही इस विश्व की रक्षा करेगी। अबोधिता के अतिरिक्त कोई भी अन्य चीज़ विश्व को बचा नहीं सकती।

जो भी कुछ आप जानते हैं, जो भी कुछ आप कहते हैं या लिखते हैं कृपा करके ध्यान रखें कि इससे आपके अन्तर्निहित अबोधिता को चोट न पहुँचे। नैतिकता विहीन जीवन जीने की कोई आवश्यकता नहीं है। आपकी अबोधिता का होना ही आवश्यक है। अबोधिता ही आपको नैतिक शक्ति तथा नैतिक सूझ बूझ प्रदान करती है। आपको कोई पुस्तकें नहीं पढ़नी पड़तीं और न ही किसी गुरु के पास जाना पड़ता है। अबोधिता आपका पथ-प्रदर्शन करेगी और बताएगी कि ठीक क्या है। सहज में यही आपने प्राप्त करना है। आप सबको आत्म-साक्षात्कार मिल चुका है। आप लोगों के साथ ये बहुत बड़ी घटना हो गई है। मैं चाहती हूँ कि आप सदैव अपने अन्तर्निहित श्रीगणेश की पूजा करें। श्री गणेश अबोधिता हैं, वे ही आत्मा हैं। जब भी आप आत्मा को जानना चाहें श्री गणेश के साथ एकाकारिता बना लें।

ये आपके अन्तर्निहित हैं और श्री गणेश की शक्ति से पूर्णत: ज्योतिर्मय हो जाना आप सब लोगों के लिए बिल्कुल सम्भव है। मुझे बहुत खुशी है कि आप सबने अपने लिए चुने गए साथियों को स्वीकारा और विवाह करने का निर्णय कर लिया। परन्तु अब भी यदि आप न चाहते हों तो यह विवाह न करें। किसी तरह की चालाकी करने का प्रयत्न न करें। कोई अटपटा कार्य न करें जिसके कारण आप अपने विवाह का आनन्द न उठा पाएं। पहले दिन से ही ये बात समझने का प्रयत्न करें कि आपको अपने जीवन साथी के प्रति अत्यन्त करुणामय होना होगा, अत्यन्त सम्मानमय, प्रेममय और करुण। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है जिसे लोग न तो समझते हैं न स्वीकारते हैं। मैंने सुना है कि सहज विवाह को लोग अपना अधिकार मान लेते हैं, नहीं। इसे कभी भी अधिकार न माने। वास्तविक आनन्द यदि आप प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने अन्दर निश्छल प्रेम बनाए रखें और जीवन का आनन्द लें। परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

मैंने लड़कियों के सम्मुख कोई भाषण नहीं दिया। मेरे विचार में विवाह को कामयाब बनाने का उत्तरदायित्व पुरुषों पर कहीं अधिक है। पुरुषों को समझना चाहिए कि विवाह उनके जीवन का बहुत महत्वपूर्ण भाग है। विवाह को उचित सम्मान दिया ही जाना चाहिए। आरम्भ से ही जिस प्रकार आप अपनी पत्नी की देखभाल

करते हैं उससे बहुत सहायता मिलती है। पहले ही दिन से अत्यन्त सावधान हो जाएं। किसी प्रकार का भ्रम न पालें। आपकी पत्नी किसी अन्य देश से आई हैं। उसके अपने ही विचार हैं, अपने ही प्रकार से उसका पालन-पोषण हुआ है। उसके विचारों को समझने का प्रयत्न करें और उसका सम्मान करें। इस कार्य को गम्भीरतापूर्वक करें यह कोई मजाक नहीं है। विशेष रूप से सहजयोग में आपको समझना चाहिए कि इसी के कारण आप पावन दम्पति हैं जिनका दायित्व है कि सहजयोग को सम्पन्न बनाएं। सहजयोग अत्यन्त महान उपलब्धि है जो पूरे विश्व को बहुत सुन्दर संस्थान में परिवर्तित कर सकती है और इसकी जिम्मेदारी आप पर है। पुरुष होने के नाते आपको अपनी जिम्मेदारी समझनी है कि आप एक महान व्यक्ति हैं और परिवार के मुखिया। कल मैंने आपको बताया था कि मुझे तलाक में विश्वास नहीं है। मैं आपसे आशा करती हूँ कि आप अच्छे पति बनेंगे और अपनी पत्नियों को अत्यन्त प्रेम, स्नेह एवं दुलार देंगे। सहजयोग में पुरुष और महिलाएं पूर्णत: समान हैं। चाहे एक जैसे न हों परन्तु पूर्णत: समान हैं और वे एक दूसरे के पूरक हैं। आप अपने जीवन को महत्वपूर्णतम मानकर अपनी पत्नी की उपेक्षा न करें। मैंने देखा है कि सहजयोग में अधिकतर विवाह सफल होते हैं और सहजियों के बच्चे भी अत्यन्त सुन्दर होते हैं। **विवाह केवल अहं की स्पर्धा के कारण असफल होते हैं।** अहं यदि पुरुषों में न हुआ तो महिलाओं में होता है और यह आपके, आपकी पत्नी के, आपके बच्चों के जीवन को नष्ट कर सकता है। महिलाएं विवेकशील होती हैं परन्तु उनकी सहन-शक्ति की भी सीमा होती है। अत: हमें देखना चाहिए कि एक अच्छा परिवार बनाने के लिए हमें कितने विवेक की आवश्यकता है। यही हमारी आवश्यकता है क्योंकि अच्छे परिवारों में ही अच्छे बच्चे जन्म लेंगे और सहजयोग सार्वभौमिक बन जाएगा। अत: केवल अपनी ही चिन्ता न करें अपनी पत्नी का भी ध्यान रखें। उसकी जरूरतों और इच्छाओं का ध्यान रखें। ये आपकी जिम्मेदारी है। विवाह के लिए विवाह आप नहीं कर रहे। विवाह आपकी जिम्मेदारी है। कम से कम 95% सहजयोग विवाह सफल होते हैं और सहजयोगियों के यहाँ बहुत सुन्दर बच्चे भी जन्म लेते हैं। ऐसे बच्चे जो अत्यन्त विवेकशील हैं। फिर भी यदि आपको विवाह से कोई समस्या है तो आप मुझे बताएं। सहजयोग एक बहुत बड़ा सार्वभौमिक परिवार है। अत: आप पूरी सहजयोग संस्था के प्रति उत्तरदायी हैं। आपकी पत्नी एक अन्य परिवार, अन्य देश, अन्य वातावरण से आ रही है अत: उसे चीज़ों को समझने दें तथा सामंजस्य स्थापित करने दें। उसमें दोष न खोजें। अत्यन्त सुख तथा प्रसन्नता उसे प्रदान करें तभी वह सहजयोग में भली-भांति उन्नत होगी। बच्चों का भी माँ का सम्मान करना अत्यन्त आवश्यक है। जिस प्रकार आप सम्मान करते हैं उसी प्रकार बच्चों को भी माँ का सम्मान करना चाहिए। विवाह के प्रति यदि आप गम्भीर हैं तो आपका जीवन निश्चित रूप से आनन्दमय बन जाएगा। सहजयोग में किसी को विवश नहीं किया जाता। आपने स्वयं सहजयोग में विवाह करने का निर्णय लिया है और इस प्रकार ये विवाह हो रहे हैं। महिलाओं को मैंने कुछ नहीं बताया क्योंकि वे बहुत विवेकशील हैं और अपने भविष्य की ओर

अत्यन्त उत्सुकतापूर्वक देख रही हैं। मैं सोचती हूँ कि सदैव महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों को ही विवाह की जिम्मेदारी को समझना चाहिए। अन्तर्जात रूप से महिलाएं जानती और समझती हैं कि उनके विवाहित जीवन का सफल होना बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु मैंने पाया है कि कभी-कभी पुरुष उन पर अपना अधिकार मान लेते हैं ऐसा नहीं होना चाहिए। प्रेम एवं स्नेह से जो भी कुछ वह करती है उसकी सराहना होनी चाहिए। उसकी सराहना करने से ही आप उसके प्रति अपने प्रेम की अभिव्यक्ति कर सकते हैं।

आप जानते हैं कि हम सहजयोग में अन्य पुरुषों की तरह से चलने की आज्ञा नहीं देते। इसकी किसी भी प्रकार से आज्ञा नहीं है। मुझे आशा है कि आप समझदार हैं और इस बात को समझेंगे कि आपने एक सहजयोगिनी से विवाह किया है। किसी सामान्य लड़की से आपका विवाह नहीं हुआ आपका विवाह एक सहजयोगिनी से हुआ है आप उसको पूर्ण गौरव प्रदान करें और इस प्रकार आप सहजयोग को भी गौरवान्वित करेंगे।

परमात्मा आपको धन्य करें।

दिल्ली पब्लिक प्रोग्राम

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (25.3.2000)

आज तक हम लोग जानते ही नहीं थे कि हमें केवल सत्य मिला नहीं। जिस चीज को बुद्धि ठीक समझती थी उसी को हमने सत्य मान लिया। फिर बहकते-बहकते ये बुद्धि उस दिशा में चल पड़ी कि कोई सा भी काम करो वो ठीक है, अच्छा है। इससे लाभ है ये ही करना चाहिए। सत्य से परे मनुष्य भटक गया और भटकते-भटकते पता नहीं कौन सी खाई में जाकर गिरा। ये देख कर के लोग सोचते हैं कि ऐसे कैसे हुआ? ऐसी स्थिति क्यों आई? मनुष्य के अन्दर जो बुद्धि है उस बुद्धि को उस तरह से कुबुद्धि में परिवर्तित क्यों कर दिया? उसको सुबुद्धि बनाना था। वो कुबुद्धि हो गई! और उस कुबुद्धि से ऐसी ऐसी चीजें निकलने लगीं जिससे न तो दूसरों को कोई सुख हो सकता है न तो स्वयं को कोई सुख हो सकता है। हम लोग कभी-कभी घबरा जाते हैं सोच कर के कि ये क्या हो रहा है। मारकाट हो रही है और हर तरह का हिंसक कार्य हो रहा है। छोटे-छोटे बच्चों तक को कोई नहीं छोड़ता। इस तरह की अनेक विकृतियां हमारे अंदर जो जागरूक हो गई हैं। उसको देख कर के यही मैं कह सकती हूँ कि घोर कलयुग है। कलयुग की परिसीमा है। इतना तो वर्णन शास्त्रों में भी नहीं है कि ये ऐसा काल आएगा। उन्होंने साधारण इधर उधर की बातें कीं। ऐसा मुझे लगता है कि लोग जो हैं वो पीतल में खाना नहीं खाएंगे और लोहे में खाना खाएंगे। इस प्रकार की बहुत ही औपचारिक बातें इसमें लिखी हैं। लेकिन जो दृश्य है, जो सामने दिखाई देता है वो बहुत भयानक है और बहुत विचलित करने वाला है। इसके पीछे यही कहना चाहिए कि मनुष्य को अपना रास्ता नहीं मिला और वह कहां से कहां भटक गया! उसको सुख नहीं मिला। इस सुख की खोज में वो गलत चीजों के पीछे भागा जिसे मृगतृष्णा कहते हैं। इस प्रकार मनुष्य भटकते भटकते घोर अंधकार में डूब गया। वो ये भी नहीं जानता कि जो मैं कर रहा हूँ वो कुकर्म है और इस कुकर्म का फल मुझको तो बुरा मिलेगा ही और को भी मिलेगा। इस तरह की चीजें इतनी बढ़ गई हैं कि कभी-कभी समझ में नहीं आता कि ये संसार कहां जाने वाला है। अपने देश में अनेक प्रश्न हैं और देशों में भी बहुत से प्रश्न हैं। ये सोचना कि बाहर के लोग बहुत ठीक हैं ये गलत बात है। वो भी खोज में लगे हैं और उस खोज में वह देखना चाहते हैं कि किस तरह से वो उस स्थिति को प्राप्त करें जिससे वो मनुष्यता तो कम से कम पा लें। इसका जो भी परिणाम है वो ये है कि मनुष्य निराशा में चला गया, उसके अंदर गहन निराशा आ गयी। वो सोचता है अब क्या

करें? सब ऐसा ही चलता है, चलेगा। इसको कोई ठीक कर नहीं सकता।

ऐसे ही वक्त एक बात हमें याद रहना चाहिए कि साधु सन्तों ने कहा है कि अपने ही अंदर खोजो, अपने ही अन्दर सब कुछ है। काहे रे वन खोजन जाई सदा निवासी सदा अनन्ता तोहे संग समाई। वो कौन है। वो कौन सी चीज है जिसके बारे में सब संतों ने हिन्दुस्तान में भी कहा है बाहर भी कहा है? सब धर्मों में भी है। इतना विप्रयास धर्मों का भी हो गया कि लोग इस बात को भूल ही गये कि जो हमारे अंदर है उसे खोजना है। और हमारे अंदर हमारी आत्मा है। हर इंसान में ये आत्मा पूरी तरह से जीवित अवस्था में है। वो आत्मा जो है वही परमात्मा का प्रतिबिम्ब हमारे हृदय में है। ऐसी तो बातें सभी कहते हैं। सबने बताया की ऐसी आत्मा है। लेकिन लोग कहते हैं माँ हमने तो कभी जाना नहीं की ऐसी कोई चीज है। अब आपका समय आ गया है इसे जानने का कि हमारी आत्मा, अन्तर-आत्मा क्या चीज है और इस आत्मा को हम किस प्रकार पा सकते हैं। ये आत्मा माने जैसे अच्छी सी अंदर सब चीज देख रही है और अपने प्रकाश से भी अपने ही अंदर समेटे हुए है। वो ये भी नहीं करती कि कहीं हम गलत काम कर रहे हैं तो इस गलत काम पर कोई प्रकाश डाले। क्योंकि हम तो अपनी सुबुद्धि को कुबुद्धि बना चुके और हम देख ही नहीं सकते कि हम कोई गलत काम कर रहे हैं। हर तरह का गलत कर्म हम करते हैं और कहते हैं हम तो बहुत अच्छे आदमी हैं। इस प्रकार हमारी सत्सत् विवेक बुद्धि भी खत्म हो जाती है।

अब इसी आत्मा को पाने की बात है और इस आत्मा को किस प्रकार पाया जा सकता है ये समझना चाहिए। इसी के लिए आपके शरीर के अंदर ही इसकी व्यवस्था है। कोई बाहर जाने की जरूरत नहीं। आपके ही त्रिकोणाकार अस्थि में एक शक्ति कुण्डलिनी, एक पवित्र शक्ति स्थित है। जब इसकी जागृति होती है तो वो छः चक्रों में से गुजरती हुई अंत में ब्रह्मरन्ध्र को भेदते हुए उस सूक्ष्म शक्ति से एकाकारिता करती है जो परमेश्वर की प्रेम शक्ति है। ऐसे अपने शास्त्रों में लिखा था। लेकिन ऐसे तो कोई करता नहीं। अपने देश के बहुत से साधु संत बाहर गये। मेरे ख्याल से मछिंदरनाथ, गोरखनाथ गये होंगे क्योंकि बोलिविया में भी ये लोग सब जानते हैं। ये चक्रों के नाम जानते हैं और वो कुण्डलिनी के जागरण की बात जानते हैं। रूस में भी मैंने देखा है और हर जगह देखती हूँ की पुरातन जो पेंटिंगस है वो कितनी वहाँ चित्रकारी है। उसमें सब चक्र बने हैं। आप अगर थोड़ा सफर करें तो आप हैरान होंगे कि ये सब चीजें इन्होंने कहाँ जानी और कैसे जानी? ये किसने बताया? इसके लिए अपने यहाँ के कोई न कोई संत साधु गये थे, ऐसा बताते हैं और उन्होंने ये बातें बताई। मगर हम लोगों को भी बता सब चले गये और हमारे यहाँ भी लिख कर चले गये कि ऐसी कुण्डलिनी आपके अंदर है। यहां तक के जो नाथ पंथी लोग थे उन्होंने इसके बारे में किसी को बताया नहीं क्योंकि वो सोचते थे किसी और को दे दीजिए तो लोग इसका क्या इस्तेमाल

करेंगे? क्या करेंगे क्या नहीं करेंगे? और हुआ है। जिन्होंने ऐसी चीज पढ़ी वो दुनिया भर की झूठी-मूठी बातें फैलाते हैं और खूब उन्होंने पैसा कमाने धंधा बनाया। तो उनका यही विचार रहा होगा कि ये सर्वसाधारण इन्सान के लिए नहीं देना। लेकिन किताबों में लिखा है। अब बारहवीं शताब्दि में ज्ञानेश्वर जी आए उन्होंने अपने गुरु से कहा कि आप मुझे इजाजत दें, मैं अपनी ज्ञानेश्वरी में इसके बारे में लिखना चाहता हूँ। छठे अध्याय में उन्होंने लिखा! लेकिन ऐसा भी होता है कि धर्म के नाम पर बहुत लोग पैसा कमाते हैं। तो उन्होंने कहा 'नहीं, ये निषिद्ध है, इसको मत पढ़ो। ये बेकार चीज है। ये सबके बस का नहीं। अभी मैंने एक बड़े भारी साधु बाबा का लैक्चर सुना। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ, उन्होंने कैसे ये कहा आसानी से? आप नहीं समझ पाएंगे। पर इस तरह से गाली दी कि आप लोग सब प्रवृत्ति मार्गी हैं। निवृत्ति मार्गी नहीं है। प्रवृत्ति माने इधर उधर दौड़ने की आपकी जो क्रिया है वो आप है। अब बताइए! और सब हाँ-हाँ कर रहे। पर आप निवृत्ति मार्गी नहीं है तो आप को ज्ञानमार्गी होना चाहिए क्योंकि सहज योग ज्ञान-मार्गी है। आप अपने तरीके से चलिए और गुरुओं की सेवा करिये। उनको प्रसाद दीजिए इनको ये करिये वो करिये। और लोग मान गये! कोई किसी को कहे कि तुम निवृत्ति नहीं हो तो एक तरह से तो ये गाली हो गई। लेकिन किसी को संस्कृत ही मालूम नहीं। जो बोल रहे हैं ठीक ही बोल रहे हैं। कुछ तो हमें इन्होंने बनाया है और प्रवृत्ति पाने का मतलब है आप गलत-गलत चीज की तरफ दौड़ना और इसलिए इन्होंने साफ-साफ कह दिया कि आप सब गुरुओं की सेवा करिए। एक बोरा भर के आप बहुत से मूर्तियाँ ले आइए, उनकी पूजा करिए। अब बैठे हैं सवेरे चार बजे से, कर रहे हैं। फिर ये उपवास करिए ये तपास करिए, इतने कर्मकाण्ड हमारे अन्दर भर दिए कि हम उसी में मिटे जा रहे हैं। ये भी नहीं हमारे समझ में आता ये क्यों कर रहे हैं? इसका क्या फायदा हुआ हमारे बाप दादाओं ने यही किया और हम भी यही कर रहे हैं? मोहम्मद साहब ने साफ कहा कि मूर्ति पूजा बन्द क्योंकि पता नहीं किसने बनाई है। ये चीजें किन लोगों ने बनाई हैं। लेकिन ये ठीक है कि इन्होंने जो मक्का में एक काले पत्थर के चारों तरफ प्रदक्षिणा डालने की बात कही है वो क्यों है? इस पत्थर में क्या विशेषता थी? इस पत्थर में क्या बात थी जो कह रहे थे कि मूर्ति पूजा मत करो पर इस पत्थर के चारों तरफ क्यों घुमाते हैं? इसकी वजह ये थी कि मक्का में मक्केश्वर शिव हैं; वो शिव हैं, मक्केश्वर शिव हैं। लेकिन अब कैसे जानिएगा कि वो मक्केश्वर शिव हैं? आप कैसे जानिएगा कि स्वयंभू मूर्ति कौन सी है? आपके पास कोई साधन नहीं। इसीलिए जब कुण्डलिनी का जागरण होता है तो ये छः चक्रों को छेद कर चारों तरफ फैली हुई दैवी शक्ति से एकाकारिता प्राप्त करती है तब आपके हाथ में चैतन्य बहता है। तब आपके हाथ बताएंगे कि क्या सत्य है और क्या गलत। इतनी सुन्दर व्यवस्था हमारे अन्दर पहले ही से बनी है। ये कुछ बनाने की जरूरत नहीं।

अब आपके हाथ बता रहे हैं, माने आपके हाथ जानते हैं। मोहम्मद साहब ने कहा है कि जब कियामा आएगा तो आपके हाथ बोलेंगे। आ गया क़ियामा। अब इसे प्राप्त करो। कोई पढ़ता भी है, जब हाथ बोलेंगे तो इस हाथ से पता चलेगा क्या चीज़ गलत है, क्या चीज़ अच्छी है क्या चीज सही? अब कोई कहे कि मक्का में क्या रखा है हाथ उधर करके देख लीजिए। जो लोग सहजयोगी हैं सब देख सकते हैं कि कितनी चैतन्य की लहरें हैं तो कौन सत्य है और कौन असत्य। ये आप अपने हाथ पर जान सकते हैं। इतनी सुन्दर व्यवस्था कि पूरा यन्त्र ही हमारे अन्दर बना हुआ है। इतना सुन्दर। जब ये व्यवस्था होती है और जब आप उसे प्राप्त कर लेंगे तो कमाल की बात है कि आपके अन्दर के दोष अपने ही आप विलय हो जाते क्योंकि आप दूसरी ही दुनिया में गुजर जाते हैं। आपके अन्दर काम, क्रोध, मोह, मद-मत्सर, लोभ ये जो आपके शत्रु हैं, भाग जाते हैं। हमारे लिए तो आश्चर्य की बात है कि इंग्लैण्ड में जब हमने पहले दिन प्रोग्राम किया था तो वहाँ छः ड्रग एडिक्ट (नशेड़ी) आए। वो लोग ड्रग लेते थे और दूसरे दिन ही वो साफ हो गए। भई ये तो कमाल है ये कैसे हो गया? कहने लगे अब तो हमें पता नहीं हमें तो लेना ही नहीं, हमें अच्छा ही नहीं लगता। ये बेकार है। बड़े बढ़िया लोग हो गए। वही आज बहुत कार्यान्वित हैं और कार्य कर रहे हैं। तो ये जो चीज है कि अपने को प्राप्त करो कहा है, माने अपनी आत्मा को जानो, इसकी व्यवस्था भी हमारे ही अन्दर बनाई हुई है जैसे कोई बड़ी दैवी हमारे अन्दर विद्या है। या कहना चाहिए कि ये मशीन है हमारे अन्दर। जब ये चलकर, जब ये शुरू हो जाती है तब एक से एक चमत्कार आपको अपने ही बारे में दिखाई देते हैं। जितने शराबी शराब पीते थे उन्होंने शराब छोड़ दी, कितने ही दुष्ट लोग थे उन्होंने दुष्टता छोड़ दी। मैं तलियाती में गई तो वहाँ पर एक माफिया के मुख्य डॉन थे तो उन्होंने सहजयोग ले लिया। मैंने कहा भई कमाल है इन्होंने सहजयोग कैसे ले लिया? कहने लगे माँ वो सहजयोगी हो गए आपको मिलना चाहते हैं। वो आए तो इतने नम्र। बस उन्होंने इतना कहा कि माँ मैंने बहुत गुनाह किए हैं इनको मुझे माफी मिल जाएगी या नहीं ये बता दो? अरे! मैंने कहा क्या बात करते हो, तुमने गुनाह किए वो तो हो गए। अब भूतकाल में हो गए पीछे हो गए। आज मैं तुमसे जो बात कर रही हूँ वर्तमान की। और वो बात अब खत्म हुई, अब वर्तमान में तुम क्या हो? तुम आज कहाँ से कहाँ हो गए हो, ये देखना है। फिर उसने इतनी मदद की, हम लोगों की इतनी सराहना की और एक तरह से बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये जिस तरह जो माफिया का जो सबसे वहाँ मुख्य आदमी था उसमें ये बदलाव कैसे आ गया? वो कैसे इस चीज को मान गए? ये घटित हो गया, उसमें किसी को लैक्चर नहीं दिया, किसी को समझाया नहीं, बताया नहीं। ये घटना है और ये घटना इस कलियुग में होनी अत्यावश्यक है क्योंकि इससे आदमी जो है परिवर्तित हो जाता है Transform हो जाता है। और जब आदमी परिवर्तित हो जाता है तब वो इतना निखर आता

है इतना सुन्दर हो जाता है। आज दुनिया को इस परिवर्तन की ज़रूरत है। यही परिवर्तन करना ही हम सोचते हैं, आप सब सहजयोगियों का काम है। मैंने जहाँ तक हुआ है, की है मेहनत। इतने देशों में घूमी फिरी हूँ। अब आप लोगों को चाहिए जो सहजयोग में आए हैं या आने वाले हैं उनको चाहिए कि और लोगों को बताएं और उनको इस परिवर्तन में लाना है बहुत से लोग भटके हुए हैं यानि परमात्मा के नाम पर भटके हुए हैं, धर्म के नाम पर भटके हुए हैं किसी भी चीज़ में भटके हुए हैं। इनको जब आप इस अवस्था में लाएंगे तब आप देखिए इनका दीप कैसे जलता है। अब इतनी सारी यहाँ बत्तियाँ जल रही हैं। इनका अगर कनैक्शन इनके साथ न हो, मेन के साथ, तो क्या जल सकती हैं? इसी प्रकार जब तक हमारा ही सम्बन्ध जैसे कि ये है इसका सम्बन्ध ग़र मेन के साथ नहीं है तो इसका कोई उपयोग ही नहीं। इसी प्रकार हमारी हालत है कि हमारा सम्बन्ध इस महान शक्ति के साथ है और सबसे बड़ी बात ये है कि ये सत्य ही थी, सत्य ही है।

जब आपका चित्त इस आत्मा के प्रकाश से आलोकित होता है तो आप एक अलग ही प्रकाशमान व्यक्ति हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति कि जो सारे संसार की भलाई करता है। सारे संसार में ग़र मनुष्य बदल गया तो कौन सी आफ़त आएगी। सारी आफ़त तो मनुष्य से ही है। जब मानव ही बदल जाएगा तो कोई सी भी परेशानी, कोई सी भी तकलीफ नहीं आएगी। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि किसी तरह से जितना हो सके और लोगों की भी जागृति करें और इस जागरण में इसे पाएं। इसको प्राप्त करने के बाद देखिए, मैंने तो यही देखा है, न कहीं झगड़ा होता है, न कोई आफ़त होती है। कोई भी देश के लोग आएं, कहीं से भी आएं, न कोई मोर्चा बाँधता है न कोई झण्डे उठाता है, कुछ नहीं। बस एक दूसरे का समागम है। सबसे बड़ा आनन्द का सागर है और एक दूसरे से मिलकर ही बड़ा अच्छा लगता है। अपने देश की तो संस्कृति है कि भाईचारा होना चाहिए। सबको आपसी मिलावा होना चाहिए। हरेक चीज़ में एक तरह से दूसरे की मदद करनी चाहिए। ये तो अपनी संस्कृति है।

विचित्र-विचित्र बातें होती गईं। ये देश अनेक हिस्सों में विभाजित हो गया और इसलिए इसमें भी बहुत से झगड़े हो रहे हैं। जहाँ देखो वहीं झगड़े। कहीं जाइए तो एक मोर्चा लिए ये खड़े हैं तो उधर दूसरा मोर्चा लिए खड़े हैं और कोई भी बात को लेकर के इस तरह से कोई सी भी चीज को लेकर के एक गठबन्धन करने का और झगड़ा करने का। ये इन्सानियत की निशानी नहीं, ये तो जानवर भी नहीं करते फिर इन्सानों को तो ऐसा नहीं करना चाहिए। इन्सान जो है ये सबसे ऊँची चीज परमात्मा ने बनाई है और इसमें इतना सुन्दर अपने अन्दर जो पूर्णतः ये एक इन्तजाम कर दिया, ऐसी व्यवस्था कर दी है कि आप बहुत आसानी से इसे प्राप्त कर लें और इसके लिए आपको पैसा-वैसा देने से कोई मतलब ही नहीं है। जैसे एक साहब मुझसे कहने लगे कि मैं आपको एक लाख रुपया देता हूँ

आप मेरी कुण्डलिनी जगाइए। मैंने कहा जनाब मैं आपको दो लाख रुपया देती हूँ आप बातचीत बन्द करिए। क्योंकि कुण्डलिनी को पैसा नहीं समझ में आता। कुण्डलिनी जो है एक दैवी शक्ति आपके अन्दर है आपकी शुद्ध इच्छा होने पर, ग़र आपकी शुद्ध इच्छा नहीं हुई तो जबरदस्ती नहीं हो सकती। ये ऐसा क्या चलेगा आप जबरदस्ती नहीं कर सकते। ग़र आपके अन्दर शुद्ध इच्छा है तभी ये कार्यान्वित होगी। अब हमारी कोई सी भी इच्छा शुद्ध नहीं है ग़र शुद्ध होती तो आपका आजकल जो Economics है ये नहीं चलता। Economics में क्या है कि आज आपने समझ लीजिए मार धाड़ करके घर बनाया पर इसका कोई सन्तोष नहीं। फिर आपको मोटर चाहिए, इसका भी सन्तोष नहीं। किसी चीज से सन्तोष ही जब नहीं मिलता इसका मतलब आपकी इच्छा शुद्ध नहीं। ग़र शुद्ध इच्छा होती तो आपको सन्तोष मिलता लेकिन एक ही चीज में शुद्ध इच्छा है, वो ये है कि अपनी आत्मा का आत्मसाक्षात्कार। आत्मा आपके चित्त में है। इसका प्रकाश आपको आनन्द देगा, शान्ति देगा। सब तरह से ज्ञान देगा लेकिन सबसे ज्यादा ये आपको सामूहिक बनाएगा। इसमें आप सामूहिक हो जाएंगे। सामूहिकता की बात ये है कि दुनिया में हम लोग ये सोचते हैं हम लोग अलग हैं। ये फ़लाने हैं ढिकाने हैं। ऐसा तो परमात्मा की नज़र में नहीं हैं। परमात्मा की नज़र में सब हम लोग उन्हीं के आश्रय में हैं। ये दिमागी जमाखर्च है कि हम ऊँचे हैं, ये नीचे हैं, ये फलाना है ढिकाना हैं। सब बिल्कुल ही दिमाग़ी जमा खर्च है। आज देखिए हमसे मिलने एक आए थे, साहब वो आइवोरी कोस्ट के मुखिया थे, वो इतने नम्र आदमी इतने नम्र आदमी कि मैं तो हैरान हो गई। आकर नम्रतापूर्वक मुझसे कहते हैं कि माँ ऐसा करिए कि हमारे देश में सब लोगों को सहजयोगी बना दीजिए। मैंने कहा अच्छा ठीक है तुम्हीं बना सकते हो सबको। कहने लगे मैं तो इतना मज़े में आ गया हूँ। उन्होंने तीन बीवियोंसे तलाक लिए। अब कहने लगे मैं तो शर्मिन्दा हूँ, मेरी क्या जिन्दगी है? मैंने क्यों ऐसी जिन्दगी बनाई? मेरे समझ में नहीं आया पर अब जो है मैं बिल्कुल बदल गया हूँ। अब मेरे अन्दर इतना आनन्द, इतनी शान्ति और इतना सुख है। और छः सौ लोग, छः सौ लोग वहाँ पर जो हैं सहजयोगी हैं और उन्होंने मुसलमान धर्म लिया था। मैंने कहा तुम मुसलमान क्यों हो गए? तो उन्होंने कहा कि इसलिए क्योंकि ये जो फ्रैन्च लोग हैं इनमें तो कोई नैतिकता है ही नहीं, Morality है ही नहीं। इनकी तो नैतिकता एक दम बिल्कुल गई बीती है। तो हमने कहा मुसलमानों का धर्म ले लो उससे थोड़ी तो नैतिकता बनी रहेगी। इसलिए हम बन गए। तो मैंने कहा सहजयोग में तो सभी धर्म एक समान हैं। इसमें किसी धर्म का अपमान नहीं, कोई ऊँचा नहीं नीचा नहीं। बल्कि आप अपने धर्म को बहुत अच्छे से समझ लेंगे। इसकी जो गहराई है उसको समझते हैं। अभी तक आप भटक रहे हैं तो आप उसे पा सकते हैं। ये असलियत है जिसके लिए ये धर्म बनाए गए थे। जो लोग आजकल धर्म के नाम पर लड़ाई-झगड़ा, ये वो करते हैं ये कैसे हो सकता

है? ये गलत चीज है और ये गलत काम इसलिए हो रहा है कि फिर से मैं कहूंगी कि अन्दर एक कुबुद्धि आ गई और कुबुद्धि ये कार्य करती है।

अब इस कुबुद्धि को भी प्रकाशित करती है आपकी कुण्डलिनी। जब ये इस चक्र से गुजरती है, आज्ञा जिसे कहते हैं, तो वो प्रकाशित कर देती है और आपको समझ में आ जाता है कि ये मैं ये क्या कर रहा था? ये किस बेवकूफी में दौड़ रहा था? ये किस बात को लेकर मैं लड़ रहा था। जब तक आप अपने को नहीं जानिएगा तब तक आप सत्य को पहचान ही नहीं सकते और अब इसी चीज में अपनी जिन्दगी बरबाद कर रहे हैं। अपनी करेंगे, अपने बच्चों की करेंगे, इतना ही नहीं पर सारे देश का ही सत्यानाश हो जाएगा। अनेक देशों का इस तरह से सत्यानाश हो रहा है। इसलिए एक जो ये चीज हमारे देश में है और जो बहुत ही पवित्र चीज है कि आपको कुण्डलिनी का जागरण करना है। अब ये कुण्डलिनी आपकी माँ है आपकी अपनी व्यक्तिगत, आपकी अपनी ही माँ है। वो किसी ओर की माँ नहीं। जैसे आपकी माँ के हो सकता है पाँच-छः बच्चे हों आठ दस बच्चे हों, इस कुण्डलिनी के आप ही बेटे हैं आप ही बेटी हैं। अब इस कुण्डलिनी का जब जागरण होता है और जब ये जागृत होती है तो इसको सबकुछ मालूम है आपके बारे में। इसके अन्दर आपके बारे में सारा रिकार्ड है कि आप क्या चाहते है, आप क्या थे, आपमें क्या-क्या दोष हैं, आपके शरीर में क्या दोष है? कहाँ कौन सी तकलीफ है? सब मालूम है उसको सम्भालते हुए ये आपकी माँ उठती है और आपको इतनी भी तकलीफ नहीं होती। आश्चर्य है। इतनी सी भी तकलीफ नहीं होती क्योंकि ये माँ है। जब आप पैदा हुए थे तो माँ ने सारा दुख अपने ऊपर झेला था। आपको कोई तकलीफ नहीं दी थी। उसी प्रकार ये माँ है। जब इसका जागरण होता है तो किसी प्रकार की आपको तकलीफ नहीं होती कोई परेशानी नहीं होती और आप एकदम कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं। और फिर ये आश्चर्य होता है कि आप ऐसे थे, ये सब आपके अन्दर था इतनी सम्पदा थी ये पता ही नहीं। वो हर तरह से आपके साथ है जैसे शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक चारों स्तर पर ये चक्र कार्य करते हैं और सब तरह से ये मामला बन जाता है। इसमें कोई शक नहीं, सहजयोग में आने के बाद तन्दरुस्ती अच्छी हो जाती है, सब कुछ अच्छा हो जाता है। इतना ही नहीं, लेकिन जो कुछ साम्पत्य स्थिति वो भी लक्ष्मी की कृपा से ठीक हो जाती है।

अपने देश में इतने लोग सहजयोगी बने हैं अधिकतर उनकी सबकी सम्पत्ति ठीक हो गई, उनका व्यवहार ठीक हो गया, उनके झगड़े खत्म हो गए। सब कुछ क्योंकि ये शक्ति चारों तरफ विद्यमान है। हर जगह विचरण करती है और बड़ी कार्यान्वित है और इस शक्ति के सहारे हमारा भला ही नहीं बल्कि एक विशेष रुप का आदर्श जीवन बन जाता है। ऐसा जीवन जिसे देखकर कहें ये क्या आदमी है इस तरह का! जैसा पहले कहते थे, साधू सन्तों के लिए। आज

तो सहजयोग में इतने लोग बैठे हैं और इतने सहज में आए हैं। ये इतने देशों में सहजयोग फैलने का कारण ये है कि सब देशों में एक प्रकार की बड़ी ग्लानि एक तरह की निराशा और दूसरे बहुत ज्यादा हिंसक वृत्तियाँ बढ़ गई हैं। सो उसमें जो लोग थे उन्होंने सोचा ये गलत है तो वो सहज में आए। ऐसे बताते हैं 86 देशों में सहजयोग फैला है। हालांकि मैं इतने देशों में तो गई नहीं, सही बात है। पर जैसे बीज उड़कर जाए, जहाँ भी वहाँ पौधा खड़ा हो सकता है। उसी प्रकार सहजयोग फैला और बड़ा आश्चर्य होता है कि वहाँ से लोग यहाँ आ जाएंगे और वहाँ भी आते हैं और इटली भी आ जाते हैं। पर मैं उनके देश में अभी तक नहीं जा पाई और हो सके तो कभी चली भी जाऊंगी। लेकिन उनका जो प्यार है उनका आपसी प्यार और जो उनका आपसी मेलजोल है वो देखकर के बड़ी हैरान हूँ। किसी एक आदमी के लिए भी अभी बम्बई में जब बम फूटा था तो एक लड़का था हमेशा कहता था माँ मैं जीना नहीं चाहता। मेरी माँ बहुत खराब है। ये है वो है बार-बार यही कहता था। उसी एक लड़के की मौत हुई। तो सारे देशों में इतने देशों में ये खबर हो गई और सब लोग दौड़ पड़े और पता लगाया कहाँ है क्या है ये, वो? फिर वहाँ जाकर कहा कि साधू सन्त हैं, ये तो उन्होंने कहा अच्छा तो हम तुमको ज़मीन देते हैं तुम चाहो तो इसे यहाँ जलाओ इसी में गाड़ो। ऐसे ऐसे लोगों ने वहाँ चिट्ठियाँ भेजी कि मैं तो हैरान हो गई। इसके बाद में अभी मैंने देखा कि हमारे भाई साहब की Death हो गई, बाबा मामा। उन्होंने बहुत लोगों को प्यार दिया, इतने लोगों के फेक्सस आए कि मैं अभी उनमें से गुजर ही नहीं पाई। इतना प्यार, इतनी-इतनी बढ़िया-बढ़िया बातें! जिसके बारे में लोगों ने लिखा मैं सोच कर हैरान हूँ! मैं नहीं सोचती थी कि ये इनका इतना प्यार लोगों में बँटा हुआ है! इतने लोग उनको प्यार करते हैं! तो ये सारा प्यार का माहौल जिसमें आप आए सब आपको प्यार करेंगे। आप भी सबको प्यार करेंगे। यही सबसे बड़ी बात है **सहजयोग की कि सहजयोग की शक्ति जो है प्रेम की शक्ति है और इसके आगे कोई और शक्ति नहीं चल सकती। प्रेम से बड़ी शक्ति जो प्रेम की शक्ति है इसी के एक बड़े भारी आवरण में आप हैं और हमेशा आपका संरक्षण है आपको कोई छू नहीं सकता क्योंकि आपको परमात्मा प्रेम करते हैं। इनके आगे कौन चल सकता है, इनके आगे कौन दुष्टता कर सकता है?** ऐसे ऐसे हमारे यहाँ उदाहरण हो गए कि लोग कहते हैं माँ कैसे मैं बदल गया मुझे पता नहीं! कैसे मैं पा गया मुझे पता नहीं! ये सारी बातें सुनकर आप लोग भी बहुत खुश होते हैं क्योंकि सब आपके ही भाई बन्धु हैं। सब आपके ही लोग हैं और इसे देखकर के यूँ लगता है कि दुनिया बदलने वाली है और दुनिया में बड़े अच्छे दिन आएंगे, बहुत अच्छे दिन आएंगे और उसमें लोग हमेशा हमेशा एक महान देश, एक महान व्यक्तित्व, एक महान कार्य को लें। ये होना है, ये हो रहा है, पर अभी भी बहुत लोगों को परिवर्तित करना है। परिवर्तन बहुत जरूरी है और अभी तक इन्सान

बने रहें लेकिन इन्सानियत से भी उतर गए। इनका परिवर्तन बहुत आसान है। इसे आप प्राप्त करें। **परिवर्तन के सिवाय कोई और मार्ग नहीं है और इसमें ये कुण्डलिनी के जागरण से होता है और किसी से होता नहीं।** अब कोई कहेगा कि माँ ये इसको अगर हम पानी में डाल दें तो चलेगा या इसको हम जलाएं तो चलेगा? नहीं चलेगा इसका सिर्फ कनैक्शन आपको लगाना है। लेकिन थोड़ा समय आपको देना होगा। और जहाँ भी आपके सेन्टर हैं वहाँ जाए और अपनी गहनता बढ़ाएं। और ये बहुत लोग कम करते हैं इसलिए इनको उन्नति होती नहीं। जब तक आप इसे सामूहिकता का प्यार नहीं देंगे, जैसे कि पेड़ पौधों को आपको जल देना होता है, उसी प्रकार ये ग़र आप नहीं करेंगे तो ये वृक्ष बढ़ेगा नहीं। इसीलिए ईसा ने कहा है कि कुछ बीज ऐसे पत्थर पर गिरे, कुछ बीज ऐसी ज़मीन में गए कि वहाँ खत्म हो गए और कुछ बीज ऐसे थे जो क़ायदे की जमीन पर रहे और पनप करके वृक्ष बने। तो इसमें कोई धर्म की निन्दा नहीं है। किसी धर्म के विरोध में नहीं, पर सारे धर्मों का गौरव इसकी विशेषता है और एक सम्बन्ध ज़बरदस्त इन सब धर्मों में है वो स्थापित होगा एक बहुत ही ज्यादा आनन्दमय, सुखमय ऐसा जीवन भविष्य में आपके लिए बना है इसे आप प्राप्त करें

ऐसा मेरा आपको अनन्त आशीर्वाद है।

भूमि पूजन- 2000

(नारी का आदर व सम्मान)

7.4.2000 (ग्रेटर नोएडा)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सत्य को खोजने वाले आप सभी साधकों को हमारा प्रणाम। मैंने तो इतनी आशा नहीं की थी कि आप इतने लोग इतनी बड़ी तादाद में इस जगह आएंगे और इस कार्य को समझेंगे। एक बार एक प्रोग्राम में हम जा रहे थे। दौलताबाद जगह का नाम है, उससे गुज़र के सामने जाना था। रास्ते में गाड़ी खराब हो गई। सहज में ही गाड़ी खराब हो गई। सो उतर के देखा तो वहाँ बहुत सी औरतें, सौ से भी अधिक, अपने बच्चों समेत। बहुत से बच्चे उनसे कई गुना ज्यादा। वहाँ एक नल फूटा था उससे पानी ले रहीं। इतनी धूप, बड़े फटे से कपड़े पहने हुए किसी तरह सर पे चुन्नी लिए हुए। मुझे समझ में नहीं आया कि क्या हो रहा है। तो मैंने उनसे पूछा कि आप लोग यहाँ क्या कर रहे हो? यहाँ कैसे आए? तो उन्होंने कहा कि हम सब मुसलमान औरतें हैं और हमारा तलाक हो गया और ये हमारे बच्चे हैं। जो महर थी वो बहुत ही थोड़ी थी। उसमें तो एक महीना भी चलना मुश्किल था लेकिन किसी तरह से हमें यहाँ काम मिल गया तो हम यहाँ गिट्टी फोड़ते हैं। और रहते कहाँ हो? तो कहने लगी सामने जो घर है। कुछ कपड़े थे। टूटा फूटा सा एक मकान तो नहीं कह सकते, उसी में हम सब रहते हैं। वहीं पता नहीं क्यों, मुझे बहुत रोना आया और एक पत्थर पर बैठ कर मैं रोने लगी। मेरे अंदर एक भावना आई कि हमारे देश में इतनी संस्कृति है इसकी पवित्रता भी है और औरतें अपने चरित्र को एक बहुत ऊँची चीज़ समझती हैं। सब कुछ होते हुए भी हमारे देश में इतनी दुर्दशा क्यों है? तो ये **ख्याल आया कि जहाँ की माताएँ ही इस प्रकार पीड़ित होंगी तो उनके बच्चों का क्या हाल होगा?** वे किस तरह से अपने बच्चों को पाल सकती हैं और उनको कौन सी शिक्षा दे सकती हैं? तब मेरे मन में ये विचार आया कि ऐसी कम से कम एक संस्था बननी चाहिए कि जहाँ इस तरह की औरतें जिनका कोई सहारा नहीं, जो किसी तरह से जी रही हैं, उनके लिए कुछ न कुछ सहारा बनाना चाहिए। अब इसे काफी साल हो गए, लेकिन सहजयोग में भी काफी मैं व्यस्त रही। उत्तर प्रदेश तो मेरा ससुराल है और वहाँ जो मैंने देखा कि औरतों की कोई इज्ज़त नहीं। औरतों को कोई मानता नहीं, सब हावी। अगर कोई औरत जबरदस्त है तो वो ही जी सकती है। जो Dominate कर सकती है वो ही जी सकती है और जो सीधी सरल है उसे खूब दबाया जाता है। हर तरह से। उसका बिल्कुल ख्याल नहीं। वो मरे चाहे जिए। अगर मर गई तो लोग उनको दावतें देंगे कि फिर से शादी करो। सब देख के मैं तो हैरान हो गई क्योंकि महाराष्ट्र में ऐसी हालत नहीं है। और जो विधवा हो गई तो विधवा ही बनी रही बेचारी।

सो तो मेरे अनुभव की बात थी तो मैंने कहा कि ऐसी संस्था सबसे पहले उत्तर प्रदेश में बनना चाहिए और बड़े आनंद की बात है कि उत्तर प्रदेश में ही यह संस्था शुरु हो रही है। इसमें तो हर हालत ये चाहेंगे कि जो औरतें अपने पैर पर खड़ी नहीं हैं और मोहताज हैं हर चीज़ के लिए, उनमें ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि वे अपने पैर पर खड़ी हो जाएं और अपने बच्चों का पालन पोषण कर सकें। उनको इज्जत मिले। पर इसी से सब कुछ होने वाला नहीं। ये समझ लीजिए कि ये एक बहुत छोटे पैमाने की बात है लेकिन ये तभी होगा जब यहाँ के समाज में स्त्री का स्थान बनेगा। यहाँ के पुरुष इस बात को समझेंगे कि उनका अपने घर की, औरतों की तरफ, बच्चियों की तरफ क्या कर्त्तव्य है और क्या उन्हें करना चाहिए। उनका जीवन बहुत एकाँगी है उसको बदलना चाहिए। और उनको अपनी Family अपने बाल-बच्चे अपनी पत्नी, माँ सबको बहुत प्यार से देखना चाहिए और समझना चाहिए। यहाँ आप सब इतने लोग हैं। सब पुरुषों ने ग़र ये कसम ले ली कि हम औरतों की इज्जत करेंगे और कोई विधवा हो जाता है। आदमी तो कभी होता ही नहीं विधवा। लेकिन ग़र कोई औरत विधवा हो जाए तो उसकी दुर्दशा है। इतनी बेचारी की दुर्दशा कर देते है। औरतें ही खुद उनको कहती हैं। औरतें ही उनको कहती हैं कि ये तो तुम्हारा दुर्भाग्य है, तुम्हारा ही कुछ है और यहाँ तक कि तुमने अपने पति को खा लिया है। ऐसा भी कहती हैं। ये तो मैंने अपने कान से सुना है। इसीलिए पहले शायद औरतें घबराहट से सती हो जाती थीं। और अगर कोई युवती विधवा हो जाए और देखने में वह सुन्दर हो तो बस उसकी कोई खैर नहीं। तो पहले तो मैंने कहा कि सहजयोग में कोई विधवा गर आए तो उसका विवाह जरूर करवाना चाहिए। पर अपने देश में कौन करेगा और करेगा भी तो उसे सत्रह बातें सुनाएगा। पुरुष होना ही वो सोचते हैं कि विशेष रूप के अधिकारी हैं कि जो चाहे सो कहें। लेकिन ये नहीं जानते कि यह नर्क की गति है। ये बहुत बुरी बात है, दुष्टता है। दूसरों के साथ दुष्टता करना ही बुरी बात है। परन्तु अपनी पत्नी, जो कि आपके सारे सुख का साधन है उसके साथ इस तरह से व्यवहार करना, तो अपनी संस्कृति का नहीं है यह काम। भारतीय संस्कृति में यह कहा जाता है "यत्र नार्या: पूज्यन्ते तत्र रमन्ते देवता", जहाँ स्त्री पूजनीय हो वहाँ पर देवता निवास करते हैं। इतना ही नहीं। पर स्त्री को भी पूजनीय होना चाहिए। इतने विपत्ति में, इतने तकलीफ में आज हमारे देश की नारी है, उसी वजह से हमारे देश में कभी अच्छा साम्राज्य आ नहीं सकता। कुछ अच्छा हो ही नहीं सकता। क्योंकि सारी देवियां, आजकल नवरात्री भी हैं, ऐसी बातों से बहुत नाराज हैं। वो कोई भी आशीर्वाद नहीं देंगी आपको। लक्ष्मी से ले कर हर एक देवी कोई भी आशीर्वाद नहीं देंगी आपको, गर आप अपनी पत्नी का ख्याल न करें और उसको सम्मान से न रखें। इसीलिए हमारे देश में इस कदर हर तरह की परेशानी है। मैं तो सोचती हूँ कि गर ये चीज ठीक हो जाए तो हमारी हर तरह की परेशानियाँ ठीक हो जाएँ क्योंकि साक्षात् लक्ष्मी का वरदान इसी से मिलता है। घर की गृहलक्ष्मी को जो नहीं मानते तो उनको क्या अधिकार है कि लक्ष्मी के आशीर्वाद से वो प्लावित हों? अब

इस मामले पर और मैंने Video पर देखा था कि उन्होंने विधवाओं को दिखाया था जो वृंदावन में और उधर गोकुल में रहती हैं। कृष्ण तो सोच रहे होंगे कि पता नहीं कहाँ से बेचारियों के साथ ज्यादती हो रही है। वो विधवाएँ हैं और उनकी बेचारियों की इतनी दुर्दशा है कि सारे दिन वे गाना गाएं और एक रुपया उनको मिलता है और उनको हर तरह से वहाँ के लोग इस्तेमाल करते हैं। पर ऐसी फिल्म देखने से किसी में जागृति नहीं आई! वहाँ पाँच लाख औरतें हैं इस तरह की। किसी के मन में धारणा नहीं आई, कि इतना पैसा कमा रहे हैं, ये कर रहे हैं, वो कर रहे हैं, कि जा करके उनका कुछ कल्याण करें, उनके लिए कोई चीज़ बनाए? माने मनुष्य इस कदर संवेदनशील नहीं, बिल्कुल उल्टा ही है। उसके मन में ये भी भावना नहीं आई। इस फिल्म को बहुत दिखाया गया। फिर मैंने कहा ऐसी फिल्म को दिखाने से कोई फायदा नहीं। अब एक थी वो वाकई यहाँ आई थीं, वो दिखाने के लिए कि वो तो सिर्फ बदनाम करने के लिए आई थीं। उनकी पब्लिसिटी बहुत हो गई, वो फिल्म दिखाने से क्या होगा। इन लोगों के पास इतने पैसे हैं तो क्यों न ये विधवा के आश्रम आदि कायदे के बनाएं? आज हैं दो चार लेकिन वो कायदे के नहीं है। तो ऐसे आश्रम क्यों न बनाए जाएँ जहाँ इन औरतों का पालन पोषण तो हो कम से कम। बहुत सी औरतें तो इसीलिए अपनी आत्महत्या कर लेती हैं कि ऐसे जीने से अच्छा हम आत्महत्या कर लें। एक तो स्त्री के लिए विवाह करना ही चाहिए और विवाह के बाद उसके पति गर नहीं रहे तो गए काम से। फिर उसका जीना मुश्किल और उस पर हर तरह की आफतें। हर तरह की आफत, इस देश में और देश में इसलिए नहीं है कि उनमें नैतिकता नहीं है। कोई गर औरत विधवा हो तो वो घूमघाम के अपना पति ढूंढ लेगी नहीं तो और कोई कारोबार ढूंढ लेगी। ये अपना ऐसा देश है कि पद्मिनी के साथ 32000 औरतें होम कुण्ड में कूद पड़ीं अपनी आबरू बचाने के लिए, अपनी इज्जत बचाने के लिए। इस देश में फिर औरतों के लिए कौन सा मार्ग बचा हुआ है? अपनी इज्जत से वो रह ही नहीं सकती। उनकी तो इतनी बुरी दशा है कि इससे मैं सोचती हूँ कि किसी को गर कोई रोग हो जाए तो कम से कम वो किसी अस्पताल में जा सकता है। उसके लिए कोई न कोई व्यवस्था हो सकती है। पर ये बताइये कि इस तरह की औरतों की जो पीड़ा है वो किस तरह से आप कम कर सकते हैं? इतना दुःख और कोई सहानुभूति तक नहीं। यहाँ तक कि एक विधवा स्त्री को गर आपने देख लिया तो बड़ा अपशगुन हो गया। एक विधवा स्त्री है तो उसके हाथ का खाना नहीं खाने का। ये अपना समाज ये नहीं जानता कि ये कहीं शास्त्रों में लिखा नहीं है। श्री राम ने स्वयं मंदोदरी का विवाह विभीषण से करा दिया। श्री राम ने (अनेक उदाहरण हैं) जिनको आप इतना मानते हैं। वो जब विधवा हो गई तो उसका विवाह उन्होंने विभीषण से करा दिया। तो फिर कहेंगे कि हाँ यहाँ तक ठीक है और नहीं तो इससे आगे कहीं नहीं शादी कर सकते। अब आप ही सोचिये कि गर आपकी माँ, बहन, बेटी, उनकी दुर्दशा हो रही है तो ऐसे समाज से तो भगवान बचाए। बेहतर है कि ऐसा कोई समाज ही न हो और अगर है तो सबको

जीने का, आनंद से रहने का पूर्ण अधिकार हो। **सो मैं चाहूँगी कि जिन्होंने कभी भी अपने घर में या बाहर में औरतों को सताया हो, उनको बिल्कुल बदल जाना चाहिए। और अपने को दोषी समझना चाहिए कि हमने एक अनाथ असहाय औरत को सताया है अपनी पत्नी को भी जिसने सताया है। अपनी बेटी को जिसने सताया है वो सब बहुत बड़े दोषी हैं** और मैं ये नहीं बता सकती कि उनका क्या हाल होगा।

क्योंकि अब सत्ययुग की शुरूआत होगी और हरेक के लिए जरूरी है कि वो धर्मपथ पर रहे। **धर्म में सबसे बड़ी चीज़ है प्रेम।** और जो अपनी पत्नी को ही प्रेम नहीं कर सकता तो वो किसको प्रेम करेगा? अपनी बेटी से ही प्रेम नहीं कर सकता वो किसको प्रेम करेगा? उसका दोष यही है कि वो स्त्री है। और अगर दुनिया में स्त्री ही न होती तो आपकी माँ कहाँ से आती और आप कहाँ से आते? इसके प्रति बहुत तीव्र संवेदना आनी चाहिए। अच्छा महाराष्ट्र में भी काफी बाल विधवा का प्रभाव था। इतना नहीं तो भी। पर वहाँ पर ऐसे-2 लोग हो गए जैसे तिलक थे, गोखले थे, रानाडे थे। इन्होंने सबने विधवाओं से विवाह किया और उन्होंने वहाँ पर बहुत चेतना लाई। Reforms किए। वहाँ पर पूना में जैसे औरतों की शिक्षा एकदम निःशुल्क है स्नातक तक उन्हें एक पैसा नहीं देना पड़ता। उससे भी ज्यादा यहाँ कार्य करने की ज़रूरत है क्योंकि यहाँ उससे कहीं ज्यादा दुर्दशा है। यहाँ के लोगों में जागृति लाना और उनमें चेतना लाना बहुत ज़रूरी है। उसी की जगह अगर औरत जबरदस्त है तो उसका राज होता है। बहुत सी औरतों ने सीख लिया है कि बेहतर है हम लोग जबरदस्त बन जाएँ। पर इसमें कोई फायदा नहीं। औरत का तो कार्य ही है कि सब चीज़ को आत्मसात करे क्योंकि पृथ्वी जैसी उसकी अपनी शक्तियाँ हैं। किन्तु अपनी शक्तियों को जगाएं और उससे सृजन करें और अपने दम पर करें और स्वाभिमान से रहें। किसी तरह की भी बातें करने से यह कार्य नहीं होगा। इसको पूरी तरह से समझ लेना चाहिए कि ये महापाप है और ऐसे गलत काम करने नहीं देने चाहिए। तभी हमारे देश में परिवर्तन आ सकता है। सिर्फ सहजयोग में आने से कोई फायदा नहीं है। सब लोगों को, सहजयोगी हों या नहीं हों, आपके पड़ोस में ही यदि कोई औरत को मार रहा है तो आपको उसे छुड़ाना चाहिए। कोई शराब पी कर घर में दंगा मस्ती कर रहा है तो उसको ठिकाने लगाना चाहिए। ये आपका सामाजिक कर्त्तव्य है और जब तक ऐसी जागृति आप लोगों में नहीं आएगी तब तक ये कार्य नहीं हो सकता। दूसरी बात खुद औरतों की ऐसी है कि इनमें इतना ज्यादा स्वाभिमान है कि ये हर हालत सह लेंगी किन्तु इनसे किसी विधवा से कहो कि तुम शादी कर लो तो हो गया बस। हमारे यहाँ एक सहजयोगिनी थी। देखने में बहुत सुन्दर थी और तीन बच्चे थे। बड़ा लड़का कोई 15-16 साल का होगा अब वो कमाने के लिए कहीं भी जाए, कोई भी काम करे, बस आदमी उसके पीछे पागल। अपनी बीबी के पीछे में नहीं है। दूसरे की बीबी और वो विधवा है तो चलो उसके पीछे। तो उनसे मैंने कहा कि, बहुत गोल घुमा के, मैंने कहा कि, मेरे ख्याल से ये जो आपके प्रश्न हैं इसके लिए अच्छा है कि आप शादी

कर लीजिए। तो वो तो बेहोश हो गई। सुनते के साथ ही बेहोश हो गई कि माँ आपने ऐसी बात कैसे कही? जब उन्हें होश आया तो उसने कहा "माँ कौन सा मुझमें ऐसा दोष पाया जो आपने इतनी कड़ी सजा सुनाई। अरे भाई ये कौन सी तुम्हें मैं सजा सुना रही हूँ। माने ये भी इतना ज्यादा हमारे अंदर संस्कार और Conditioning है औरतों में, विधवा हो गए। ये हमारे समाज की देन है। विधवा हो गए तो गए इसके बाद हम विवाह नहीं कर सकते, कुछ नहीं कर सकते, हम करेंगे तो बस बेकार। कौन समझाए। तब फिर मैंने उनके लड़के को समझाया कि तुम अपनी अम्मा को समझाओ। वो कहीं नहीं रह सकती थी क्योंकि दिखने में सुन्दर थी और शायद विधवा थी। तो एक साथ बाद उनकी खोपड़ी में बात आई, जब उन पे काफी आफतें आ गईं तब एक साल बाद उनकी समझ में आई कि माँ जो कह रही है ठीक बात है। फिर शादी की। यहाँ तो होना आवश्यक है, फिर कोई विधवा हो गई तो बिल्कुल ही दुनिया से गई बीती औरत। उनकी शादी फिर अमेरिका में करवा दी तो उनके बच्चे भी पल गए, बड़े हो गए, अपने-2 ठिकानों पर पहुँच गए। वो लोग भीख माँगेगी पर फिर से शादी नहीं करेंगी। ये भी कोई भगवान ने बताया है? किसी शास्त्र में लिखा है? कहीं भी नहीं है। ये सब यूँ ही बनाए हुए है, औरतों पर आक्रमण करने के लिए। हम तो वैधव्य को मानते ही नहीं हैं। मानते ही नहीं हैं। क्योंकि वैधव्य क्या हुआ, जो पति, मर गए, तो मर गए। अब वो वैधव्य बन कर उनके माथे पर बन गया। क्या कोई जरूरी चीज है? या तो दोनों आदमी साथ ही मरें और नहीं मरें तो औरतों की यह दुर्दशा करो। ऐसे कोई विधि तो है नहीं कि साथ मरना चाहिए, गर यह धर्म होता तो सब साथ ही मरते। पर साथ तो मरते नहीं। गर इत्तफाकन औरत बच गई तो वो तो गई काम से। इतना दुःख औरतों ने उठाया है कि अब आपको उठाने की जरूरत नहीं। फिर वो बड़ी लड़ाका भी हो सकती हैं, गुस्सैली भी हो सकती हैं। घर में बड़ा राजकारण भी करती हैं सब कुछ हो सकता है। लेकिन वो अच्छी औरत नहीं बन सकती। वो या तो बहुत दुःखी, या बहुत परेशान, तो इसलिए यह एक संस्था छोटे ही पैमाने पर बनाई गई और इस पर हम कोशिश करेंगे कि इसमें उन लोगों को ऐसे रास्ते पर लगाएं कि वो अपने पैरों पर खड़े हों तथा स्वाभिमान से जीएं। और गर वो विधवाएं हैं और अभी जवान हैं तो उनकी हम अच्छी जगह शादी कर दें। आप लोग नहीं करियेगा तो अमेरिका में करवा देंगे। आप लोग बैठे रहिए यहाँ। यही बेहतर है। अपने को बहुत समझते हैं तो बैठे रहिए। ये घमण्ड आदमी का जाना चाहिए। मैं हमेशा कहती हूँ कि reform औरतों का करने की जरूरत नहीं आदमियों का reform करो। इतना घमण्ड किस चीज का है आपके सिर पर। क्या समझते हैं आप अपने आप को। अभी कोई बता रहा था कि कोई गर I.A.S. में आ गया तो वो तो सबसे बड़ा दामाद है। तो मैंने कहा I.A.S. में है क्या? कौड़ी न धेला। कुछ कमाई नहीं, कुछ नहीं खास। मैं जानती हूँ न। गर ईमानदार है तो। गर बेईमान है तो भी आफत और गर ईमानदार है तो भी आफत। फिर भी औरतें उसमें रहती हैं। अपने चार लोगों को देखती हैं संभालती हैं प्यार करती हैं। पर मेरी समझ में नहीं आया कि ये खोपड़ी

में कैसे आया आदमियों की कि वे अगर I.A.S. हो गए तो बड़े अफलातून हो गए। कोई भी बात खोपड़ी में घुस जाती है अगर इंसान के, वो भी खासकर हिन्दुस्तान में तो वे वाकई में Balloon के जैसे उड़ने लग जाते हैं। फिर चाहे किसी के लात मारे। किसी के थप्पड़ मारे। किसी को डंडा मारे। चाहे कुछ भी करे, उसको लगता नहीं कि हम ये क्या कर रहे हैं। वैसे तो Vegetarian बनेंगे। जैन लोग कहते हैं कि मच्छर को मत मारो। खटमल को मत मारो, जो खून पीते रहते हैं हमेशा, उनको मत मारो। पर अपनी बीवी को मार सकते हैं, आसान। क्योंकि वो आपकी बीवी है और इसीलिए तो आई है कि मार खाए। अगर मार नहीं खा सकती तो वो बीवी क्या? ये जो हमारी दशा है और जो हम इस निम्न स्तर पर हैं उसकी भी वजह यह है कि हमारे अंदर के जो मूल्य हैं वे खत्म हो रहे हैं। पहले हमारे यहाँ कहते हैं कि जो बड़भूँजे होते हैं वे ही अपनी बीवी को मारते हैं। मैंने तो देखा यहाँ सभी मारते हैं, ऐसी कोई बात नहीं। कोई इस मामले में किसी को शर्म नहीं, दया नहीं। हाँ बाकी मामले में सबको खूब शर्मोहया है परन्तु इस मामले में किसी को शर्मोहया नहीं। बीवी को सबके सामने डाँट देंगे। कोई उनको उसमें हरज नहीं कि भई हमने क्यों डाँटा। एक तो पहले ही से शिक्षा नहीं घर में। यही सिखाया जाता है क्या कि इस तरह से आप व्यवहार करो? तो जहाँ तक मुझे हो सकता है मैं इस संस्था के लिए पूरी मेहनत करूँगी और जितना हो सकता है इसमें औरों का उद्धार करना चाहिए। गर आज हमारे देश में 65 फीसदी औरतें हैं, उससे भी ज्यादा, तो उस एक पूरे समाज के एक महत्वपूर्ण अंग को आप शक्तिहीन गर दें तो किस काम का है देश किस काम का है? लंगड़ा है देश आपका पूरी तरह से। बड़ी-2 बातें करने से और Lecture से कुछ नहीं होगा, फिल्म दिखाने से, नाटक दिखाने से कुछ नहीं होगा। कर के दिखाना होगा। अपने जीवन में और अपने समाज के जीवन में खड़े हो जाएँ कुछ लोग कि हाँ हम तो हैं reformist। अब बेकार की चीजें फेंको इसको। इसकी कोई जरूरत नहीं। ऐसे बंध गए हैं कि वो भी अपनी दुष्टता से छुटकारा नहीं पाते और औरतें ऐसी बन गई हैं कि वो उसको सहते ही जाती हैं। अब इसका परिणाम क्या हो रहा है वो कोई नहीं देखता बच्चे खराब हो रहे हैं। आपके बच्चे ही दुष्ट हो रहे हैं। चोरी करेंगे। ये करेंगे। ये सब आया कैसे? क्योंकि समाज टूट गया, क्योंकि family टूट गई, इसलिए हुआ। तो अपने कुटुंब जो हैं, बहुत महत्वपूर्ण चीज है। एक-एक कुटुंब से ही समाज बनता है और समाज से ही देश बनता है। देश की बातें करते हैं और कुटुंब। कुटुंब तो खत्म हो रहे हैं। अपने कुटुंब को इज्जत से रहना, स्वाभिमान से रहना, देशभक्ति से रहना तभी हो सकता है जब घर की औरत ठीक हो। उसकी इज्जत हो। उसको समझने की कोशिश करें। हमारे महाराष्ट्र में भी ऐसी एक दो समाज व्यवस्था है जहाँ इधर से जैसा ही मामला बहुओं के साथ किया जाता है। पर वो भी बदल जाएगा और ये भी बदल जाएगा। इसको बदलना ही पड़ेगा। अगर बदलेंगे नहीं, उनके बच्चे उठ कर इन्हीं आदमियों को मारेंगे। बीबी को मार की बात तो बाद में होगी। पहले इनको मारेंगे। तब सबकी खोपड़ी ठीक आएगी। इतना अहंकार मानव में है, मनुष्य में है। आखिर किस चीज

का इतना अहंकार है? कौन सी ऐसी चीज़ तुमने पाई है जिसका तुम इतना अहंकार कर रहे हो?

अब इस संस्था को चाहिए कि सब लोग पूरी तरह से मदद करें। ये नहीं कि सिर्फ पैसा दे दें, पर इसको पनपाने में। अब सबसे बड़ा प्रश्न तो ये है कि हमें ऐसी औरतों को खोजना है, उनको खोज कर निकालना है। अब हमें क्या पता कि कहाँ कि औरतें हैं, क्या, अब हम तो यहाँ रहते भी नहीं। तो इस तरह की औरतें अगर आपको मालूम हैं, जो पीड़ित हैं, दु:खी हैं और जिनका कोई सहारा नहीं, और जो विधवा बन कर बहुत कुछ सह रही हैं, ऐसी सब औरतों को आपको इस संस्था में लाना चाहिए। अभी तो ये कह रहे हैं कि 100 औरतों का इंतजाम है। 100 से क्या होगा, पर उसके बाद उनसे बातचीत करके, उनको समझा बुझा के, जो लोग अंदर आएंगी वो तो आएंगी ही लेकिन जो बाहर रहेंगी, उनको भी समझाया जा सकता है। उनके पति को भी समझाया जा सकता है, उनके घर वालों को भी समझाया जा सकता है। अपना ही देश ऐसा है जहाँ अब भी कुटुंब व्यवस्था चल रही है। बाकी कहीं नहीं है। उसका उत्तरदायित्व औरतों को है, आदमियों को नहीं। ये भारतीय नारी की विशेषता है जिसने इस देश को रोक रखा है, नहीं तो कब के चले जाते। इसलिए अब आप समझ लीजिए कि गर आपने अतिशयता करी तो यही औरतें जो हैं क्रान्ति कर देंगी आपके लिए। वो ठीक नहीं है, वो प्रेम का हनन है, अच्छी बात नहीं। अच्छी बात ये है कि समझदारी रख कर अपनी स्त्रियों की अपनी बेटियों की हिफाज़त करें। उनको देखें, सम्भालें, उनको प्यार दें। और उनको ये पता होना चाहिए कि आप उन्हें प्यार करते हैं। पूरी समझ, इसमें कोई ऐसी बात नहीं कि वो आपकी खोपड़ी पर बैठ जाएंगी। एकाध होती हैं। लेकिन आदमी गर कमजोर नहीं है तो औरत कभी भी उसकी खोपड़ी पर नहीं बैठ सकती। पर वो इतनी दबी हुई भी नहीं रहना चाहिए कि जिससे बच्चे भी नहीं पनप रहे हैं, जिसमें कुछ फूल ही नहीं खिल सकते। बच्चे तो माँ को मानते ही नहीं। माँ के पैर भी इस तरह से छुएँगे जैसे कोई ईंट या पत्थर बीच में पड़ा हो। और बाप को फुरसत नहीं। तो बच्चे तो बिगड़ ही जाएंगे। और उससे जो जो आज दशाएं हुई हैं, जो-जो आप पढ़ते हैं, पेपर में देखते हैं, उसका कारण ही ये है कि हमारी कुटुंब व्यवस्था ठीक नहीं है। वो बहुत ज़रूरी है कि उसको आप ठीक रखिए। यही हमारे समाज का ताना बाना है। इसके सहारे आज आप भी यहाँ बैठे हुए हैं और आगे भी अगर चलाना है तो कृपया याद रखिए कि औरत का मान रखना उसका उत्थान करना और लोगों को परिवर्तित करना भी आपको परम लक्ष्य की तरह से समझना चाहिए और उधर ध्यान देना चाहिए। ये मेरी आंतरिक इच्छा है। ऐसा वो आपको सबको मैं हमेशा कहती हूँ कि अनन्त आशीर्वाद। किन्तु उस आशीर्वाद में सबको अपने साथ समेटिए। हमें तो लोगों को जोड़ना है। जब एक कुटुंब ही को आप नहीं जोड़ सकते तो आप किसको जोड़ेंगे? सबको चाहिए कि प्रेम से आपस में रहें। अब आप सहजयोगी हो गए और ये बड़ी भारी बात आपने प्राप्त करी। ये ज्ञान मार्ग है और इसमें आपको पता है प्रेम क्या चीज है और किस तरह से आदान प्रदान करना चाहिए। आपस में किस तरह से समझना चाहिए।

इस चीज़ से आप हैरान होइयेगा कि सारा समाज एकदम बदल जाएगा। अपने को परदेसियों जैसे नहीं होना है। बिल्कुल भी नहीं। वहाँ तो कचहरी करेंगी औरतें, अमेरिका में तो औरतें सात-सात, आठ-आठ शादी करती हैं। औरतें और रईस हो जाती हैं तो पति सब गरीब हो जाते हैं। ये हम लोग नहीं चाहते। चाहते क्या हैं? आपसी प्रेम हो, बच्चे अच्छे से हों और आप देखिए, इससे बड़ा लाभ होगा। बहुत लाभ होगा। इतना लाभ होगा ऐसे समाज का और ऐसे देश का। इसमें ये आपसी झगड़े करना कोर्ट कचहरी करना, कोई जरूरत नहीं। गर ये सबके अच्छे के लिए है तो ये ही क्यों नहीं करते। इस तरह से समझदारी आनी चाहिए। समझदारी में बढ़ना चाहिए।

यहाँ तो मैं देख रही हूँ बहुत से सहजयोगी बैठे हुए हैं तो उनके लिए एक नई बात अब बता रही हूँ। आप सहजयोगी हैं तो सब लोगों को समझ लेना चाहिए कि ये सहजयोगी हैं। उसी प्रकार सहजयोगी समझ लेना चाहिए कि जो सहजयोगी हैं वो हैं जो नहीं है तो नहीं हैं। सबको समेटना आना चाहिए। इसी सहज योग के स्वभाव से ही आप दुनिया को जीत सकते हैं। जो बात मैंने कही है उसको आप हृदय में बाँध लें। यह दर्द है मेरे अन्दर। इस दर्द को आप लोग खत्म कर सकते हैं।

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

समर्पण एवं भक्ति का महात्म्य

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

निर्मला पैलेस-लन्दन (6 अगस्त 1982)

आज मैं आपको सहजयोग में समर्पण और भक्ति के महत्व के विषय में बताऊंगी। व्यक्ति में समर्पण एवं भक्ति होना आवश्यक है। जब हम पर्वत के समीप खड़े होते हैं तो हम इसे पूरी तरह से देख नहीं सकते। यही कारण है कि अपने समीप के विस्तार को तथा अपने सम्मुख विद्यमान महानता को हम महसूस नहीं कर सकते। उनके लिए यह भ्रम कार्यान्वित रहता है जो लोग मानसिक रूप से ये नहीं समझ पाते कि वे क्या हैं, उन्हें क्या प्राप्त हो गया है, आत्मसाक्षात्कार क्या है, इसका विस्तार क्या है, कहाँ तक उन्हें जाना है, इसके लिए उन्हें ही क्यों चुना गया है, जीवन का लक्ष्य क्या है, वे कहाँ तक पहुँच चुके हैं और कहाँ तक वो समझ सकते हैं? ये सारे रहस्य पकड़ से बाहर हैं और व्यक्ति हक्का-बक्का रह जाता है और जब उसे वास्तव में आत्मसाक्षात्कार मिलता है तो वह ये नहीं समझ पाता कि उसके साथ क्या घटना घटित हो गई है।

यही कारण है कि इसे समझना केवल तभी सम्भव है जब आप ये समझ जाएं कि स्वयं को किस प्रकार समर्पित करना है और किस प्रकार भक्ति करनी है।

अपनी राष्ट्रीयता के आधार पर यदि आप किसी चीज़ का विश्लेषण करना चाहेंगे तो हक्के-बक्के रह जाएंगे। ये आपकी बुद्धि से बहुत परे है। बड़ी अनोखी है और आपकी शक्ति से कहीं ऊपर है। ये वास्तव में आपसे परे है।

अब इसके विषय में सोचें। "आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है।" क्या आप इस बात का विश्वास कर सकते हैं कि आप अपने जीवन काल में ही आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं। किसी ने यदि आपको ये बात बताई होती तो आप कभी भी इस बात पर विश्वास नहीं करते कि किस प्रकार आप अपने इसी जन्म में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं। नि:सन्देह आप खोज रहे थे क्योंकि आपको बताया जा रहा था कि आपको खोजना है और आपको भी लगा कि आपको खोजना है। परन्तु आपने कभी नहीं सोचा था कि यह इस प्रकार से कार्यान्वित होगा कि आप आत्मसाक्षात्कार को पा लेंगे।

आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के बाद भी आप ये महसूस न कर सके कि "यह क्या था! बिल्कुल वैसे ही जैसे आपको समुद्र में डाल

दिया गया हो फिर भी आप ये न जान पाए हों कि समुद्र का विस्तार कितना है, इसमें आप कितने उतर गए हैं, ये क्या है, हम कहाँ हैं और हमारा लक्ष्य क्या है?" इन सब रहस्यों के साथ-साथ एक अन्य घटना जो घटित होती है वह है हमारा निर्विचार हो जाना। तो तार्किक रूप से आप ये जान ही नहीं पाते कि इसका औचित्य क्या है!

अत: अनुभव की विशालता, आपकी माँ के अवतरण की गरिमा या आत्मसाक्षात्कार रूपी आपको दी गई अनुपम भेंट को आप अपनी सूझ-बूझ से नहीं समझ सकते। क्या आप समझ सकते हैं कि क्या घटित हुआ है? नहीं आप नहीं समझ सकते क्योंकि तार्किकता आपको उस आयाम तक नहीं पहुँचा सकती जिसमें आप प्रवेश नहीं कर सकते। तर्कसंगति वास्तव में समाप्त हो चुकी है। यह बताने के लिए तार्किकता बाकी नहीं बची कि आप क्यों खोज रहे थे तथा आप कहाँ पहुँच गए।

तो, बूँद जो कि सागर बन चुकी है, आपके लिए केवल यही मार्ग बचा है कि स्वयं को सागर में विलय कर दें ताकि कम से कम सागर को तो महसूस कर सकें तथा अन्य बूँदों के साथ इस प्रकार से सम्पर्क बनाए रखें जिससे कि उनके माध्यम से पूर्ण (विराट) को जान सकें।

तो पूर्ण भक्ति सर्वोपरि है। ये बहुत महत्वपूर्ण है। इसी जन्म में यह इतनी अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें आपने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया है। आपने यदि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त नहीं किया, तो ठीक है, यदि आप कानाफूसी करते हैं वो भी ठीक है, आप यदि अधपके लोग हैं तो भी ठीक है, थोड़ा बहुत दुर्व्यवहार करते हैं तो भी ठीक है। सब कुछ क्षमा कर दिया जाएगा।

हर आदमी सोचता है कि श्रीमाताजी हमें क्षमा कर रही हैं। परन्तु वास्तविकता ये नहीं है। मैं तो अपने स्वभाववश क्षमा कर रही हूँ। परन्तु मेरी क्षमा को आप अपना अधिकार न मान लें। इस क्षमा को स्वीकार करके आप स्वयं को मुसीबत में फंसा रहे हैं। हर समय यदि आप सोचते हैं कि "श्रीमाताजी आप इतनी क्षमावान हैं, कृपा करके मुझे क्षमा कर दीजिए।" आपको तो क्षमा किया जा चुका है। **एक बार जब आपने मुझे श्रीमाताजी कह दिया तो मैं आपको क्षमा कर देती हूँ। परन्तु इसका लाभ क्या है? इस क्षमा का आपको कोई लाभ न होगा। आपने अपनी हानि कर ली।** इस बात को तर्कसंगति से यदि आप समझेंगे तो जान जाएंगे कि भक्ति क्या है।

अत: सहजयोग की भक्ति में व्यक्ति को महसूस करना चाहिए कि **सहजयोग में जो कुछ भी आपने देखा है वह आपके मस्तिष्क से परे है।** ये पहली बात है। **नि:सन्देह ये मानवीय मस्तिष्क से परे है।** अत: मानवीय स्तर पर इस पर बहस न करें और न ही इसकी बातचीत करें। सामूहिक स्तर पर आप इसकी बात कर सकते हैं। और जब आप सामूहिक स्तर

पर आ जाते हैं तब आपको समझना होता है कि मेरे साथ सम्बन्ध तभी स्थापित हो सकते हैं, तभी अच्छी तरह से स्थापित हो सकते हैं जब आप अत्यन्त सामूहिक रूप से तथा एक रूप होकर अन्य लोगों से सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं।

जैसे मैंने आपको बताया कि बूँद सागर बन जाती है, **अस्तित्व समाप्त करके अन्य बूँदों के साथ विलय होकर बूँद को सागर बनना है। वो सभी बूँदे जो अपना व्यक्तिगत अस्तित्व समाप्त कर देती हैं अंततः सागर बन जाती हैं।**

अतः हम देखते हैं कि भक्ति दो धारी शंकु की तरह से है जो एक ओर परस्पर सामूहिकता में जुड़ा है और दूसरी ओर आपकी माँ से।

सहजयोग में मैं जो कुछ देखती हूँ वे आप नहीं देख सकते। आप लोगों के सम्मुख ये बात प्रमाणित हो चुकी है या नहीं? या आप लोग इसके और अधिक प्रमाण चाहते हैं। अब ये प्रमाणित हो चुका है कि श्रीमाताजी हमसे बहुत आगे तक देखती है और जो भी कुछ वे देखती हैं वह घटित होता है।

अतः कोई भी व्यक्ति जो श्रीमाताजी के साथ छल करता है वह वास्तव में स्वयं से छल कर रहा है। "किसी प्रकार का भी छल यदि आप मुझसे करते हैं या आप सोचते हैं कि श्रीमाताजी क्षमावान हैं, वे हमें क्षमा कर देंगी, तो वास्तव में आप स्वयं को कष्ट दे रहे हैं; आप स्वयं को कष्ट दे रहे हैं। ये आपके लिए हानिकारक है।"

बहुत से लोग कहते हैं, "ये मेरा बायाँ स्वाधिष्ठान है।" कुछ कहते हैं, "मैं भूत-बाधित था, मेरे अन्दर भूत था।" कुछ अन्य लोग कोई और बात कहते हैं। आप जिसको भी दोष दे रहे हैं वास्तव में कौन आपसे स्पष्टीकरण माँग रहा है? आप स्वयं ही स्वयं से पूछ रहे हैं। आप अपना सामना नहीं कर रहे हैं।

तो मेरे अनुसार स्वयं का सामना करना ही भक्ति है। सर्वप्रथम आप अपना सामना करें और स्वयं देखें कि आप क्या कर रहे हैं? आप स्वयं ही खुद के शत्रु हैं कोई अन्य आपका शत्रु नहीं है। निश्चित रूप से आपकी श्रीमाताजी तो आपके शत्रु नहीं हैं। किसी भी तरह से आपकी शत्रु नहीं हैं। न ही किसी प्रकार से कोई भूत आपका शत्रु है। आप यदि उन्हें न बुलाएं तो वे नहीं आ सकते। कोई भी बुरा आदमी तो आपका शत्रु नहीं है क्योंकि यदि आप आध्यात्मिक रूप से दृढ़ हैं तो वह आपको प्रभावित नहीं कर सकता। अतः आप स्वयं अपने शत्रु हैं यह बात निर्णित है।

अपने इस शत्रु से मुक्ति पाने का एकमात्र उपाय ये है कि आप समर्पित हो जाएं।

मान लो आप कहते हैं कि मेरा श्रीमाताजी में या परमात्मा में पूर्ण विश्वास है तो आप किसी का तो आश्रय लिए हुए हैं। ये बात ठीक है न? और किसी चीज़ को आपने छोड़ा हुआ

भी तो है। परन्तु आपकी पकड़ (सम्बन्ध) बहुत दृढ़ होनी चाहिए। मान लो यदि आप डूब रहे हों तो क्या आप तार्किकतापूर्वक सोचेंगे कि 'मुझे बचाने वाले इस व्यक्ति का हाथ थाम लेना चाहिए या नहीं?" न की मजबूती से आप उसका हाथ थाम लेंगे? आपकी पकड़ बहुत दृढ़ होगी, पूरी ताकत, पूरी श्रद्धा से आप उस हाथ को पकड़ लेंगे कि किसी भी तरह से मुझे बचा लो।

हमारे अन्दर भी ऐसी ही भावना होनी चाहिए कि "मैं अपनी गलतियों के कारण डूब रहा हूँ यदि मुझे बचना है तो पूर्णतया, पूरी तरह से मुझे सहजयोग में लीन हो जाना होगा। तभी मैं बच सकता हूँ।" क्योंकि इस स्तर पर, जबकि आप उच्च कोटि के आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं, अब अगली छलांग लगाने का एकमात्र मार्ग जैसा मैं आपसे बता रही थी भक्ति है। इसके अतिरिक्त किसी भी हालत में सभी चीज़ें गौण हैं। **अब भी यदि अन्य चीज़ें आपकी दृष्टि में महत्वपूर्ण हैं और आपका चित्त इन पर है तो आप यह दूसरी छलांग नहीं लगा सकते।**

पहली छलांग आप लगा चुके हैं, आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है। परन्तु पहली छलांग से दूसरी छलांग लगाने के लिए आपको कठोर परिश्रम करना होगा। दूसरी छलांग के स्तर तक आपको आना होगा। दूसरी छलांग का सामना आपको करना होगा। स्वयं से न तो आपको विषाद होना चाहिए न ही विरक्ति। स्वयं को एक भिन्न अस्तित्व मानें।

समर्पण आपकी ओर मुड़कर, आपके अन्तर्निहित दिव्य व्यक्तित्व की ओर देख रहा है। एक बार जब आपमें दिव्य व्यक्तित्व का उदय हो जाता है। तो श्रद्धा की समस्या नहीं रह जाती। आप इससे एकरूप हो जाते हैं और इसका आनन्द लेते हैं।

परन्तु ये तर्कसंगति बहुत बुरी चीज़ है। ये आपके साथ चालाकी करती है और आपको ये नहीं समझने देती कि अभी तक जो जीवन यापन आपने किया वह अत्यन्त भौतिक और अपरिष्कृत था। अब आप इससे निकल आए हैं, इससे ऊपर उठ गए हैं अब आप उन्नत हो गए हैं। पुष्पीकृत होने और सुगंध बिखेरने के लिए आपको यह तार्किकता त्यागनी होगी। यह आवश्यक है तार्किकता से, वाद-विवाद से बचने का प्रयत्न करें। तर्क न करें। अब भी, मैं देखती हूँ, बहुत से सहजयोगी मनोविज्ञान का तर्क देते हैं। "श्रीमाताजी, हो सकता है वह असुरक्षित हो। यह अजीब बात है! कहीं पुस्तक में पढ़ लो कि असुरक्षा के कारण कोई ऐसा करता है। वास्तव में सहजयोग में अब हमने देखा है कि ये तथाकथित असुरक्षित लोग ही सबसे अधिक आक्रामक हैं। ये अन्य लोगों से चालाकी करते हैं, उनके जीवन नष्ट करते हैं और आनन्द लेते हैं। परपीड़न का आनन्द लेने वाले से नराधम लोग हैं। आपने ऐसे लोगों को देखा है इस प्रकार से वे अपने ही साथ छल करते हैं।

एक बार जब आप ये जान जाएंगे कि अपने साथ छल नहीं करना, और अपने साथ

आप छल करना क्यों चाहते हैं? क्यों अपने साथ छल करना चाहते हैं? आपको आत्मा बनना है, बस। हमें अपना शत्रु नहीं बनना चाहिए। क्या हम अपने शत्रु हैं।?

एक बार जब आप अपना सामना करने लगेंगे तो आप स्वयं को पसन्द करेंगे। आपको निराशा न होगी क्योंकि आपकी आत्मा गरिमामय है, सुन्दर है और निष्कलंक है तथा, सर्वोपरि, निर्लिप्त है।

सर्वप्रथम आपके चित्त को ये स्वीकार करना होगा कि "यह निर्लिप्सा ही मेरा जीवन है। मैं बिल्कुल भिन्न व्यक्तित्व हूँ। निर्लिप्सा ही मेरा जीवन है।"

स्वयं को निर्लिप्त करो।

एक बार एक व्यक्ति मेरे घर पर मुझे मिलने आया। मेरे पास एक सुन्दर लैम्प था जो उसे पसन्द आया। मैंने कहा,"आप ये लैम्प ले सकते हो।" वह हैरान हो गया। उसकी पत्नी ने मुझे टेलीफोन किया ये कैसे हो सकता है? आपने ऐसा सुन्दर लैम्प कैसे दे दिया? मैंने कहा, "ये कौन सी बड़ी बात है? मृत्यु के समय क्या मैं इसे साथ ले जाऊंगी? क्या ये मेरे साथ जाएगा?" तार्किक दृष्टि से देखें। उसे यदि ये पसन्द आया तो उसे ले जाने दें। घर में मेरे पास बहुत से लैम्प हैं। यदि उनमें से एक वह ले भी गया तो क्या फर्क पड़ता है? वह कहने लगी, "परन्तु मैंने अपने पति से पूछा, कि यदि तुम्हारे पास ऐसा ही कोई लैम्प होता तो क्या आप उन्हें दे देते? कहने लगे, "नहीं, मैं नहीं देता। वास्तव में मैं न दे पाता।" वह बहुत ईमानदार था और स्पष्ट कह दिया कि मैं न दे पाता। परन्तु मेरी समझ में अब भी नहीं आता कि क्यों नहीं दे पाता। इस प्रकार अन्तिम समय तक हम छोटी-छोटी चीजों से चिपके रहते हैं।

साड़ी का एक कोना यदि जरा सा भी उलझ जाए तो यह पूरी साड़ी को उलझा सकता है। तनिक सी उलझन पूरी साड़ी को उलझा सकती है। एक छोटे से पिन से आप इसे उलझा सकते हैं। **ये छोटे-छोटे पिन (लिप्साएं) उलझाने के लिए काफी हैं। इन्हें नकारा जाना चाहिए। इनकी तरफ ध्यान दिया जाना चाहिए। स्वयं की ओर देखें और कहें, "ओह! ये श्रीमान अहंकार है, ठीक है। अब मैं देखता हूँ कि तुम कैसे वापिस जाते हो?** इन सभी चीज़ों को खेल के रूप में देखने के लिए आपको स्वयं पर दृष्टि रखनी होगी तथा अपने अहं और प्रति अहं से खिलवाड़ करना होगा। वास्तव में अभी तक तो वे आपसे खिलवाड़ कर रहे हैं। एक बार जब आप उनके स्वामी बन जाएंगे तो आप उनसे खिलवाड़ करेंगे। मैंने देखा है कि बहुत बार मैं बहुत सी बातें बताती हूँ परन्तु कुछ ही समय पश्चात् लोग वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ इनके विषय में समझाने लगते हैं। बहुत बार ऐसा हुआ है।

जब भी मैं कुछ कहती हूँ तो इसके विषय में पूर्णतः विश्वस्त होती हूँ। सत्य के अतिरिक्त मैं कुछ नहीं बताती। मैं जानती हूँ कि मैं केवल सत्य बता रही हूँ। परन्तु इसके अन्दर

पैठ कर मैं ये नहीं पता लगाती कि ये सत्य है या नहीं। ये खोजने के लिए मैं कोई पुस्तक भी नहीं पढ़ती। मैं आपसे भी नहीं पूछती। मुझे स्वयं पर विश्वास है, स्वयं पर मुझे पूर्ण विश्वास है। जो भी कुछ मैं कहती हूँ, वह सत्य है। निश्चित रूप से मैं जानती हूँ कि जो भी कुछ मैं कहूंगी वह सत्य ही होगा।

परन्तु आपके साथ ऐसा नहीं है। आपके साथ ऐसा नहीं है कि जो भी कुछ आप कहें वह सत्य ही हो। **अतः सर्वप्रथम उस अवस्था में स्थापित हों कि जो भी कुछ मैं कहूँगा वह सत्य ही होगा।**

अब यह कार्य किस प्रकार करें?

जिह्वा ऐसी होनी चाहिए कि उससे जो कुछ भी आप कहें वह सत्य हो। अन्ततः आपकी कही हुई बात सत्य हो जाएगी। यही कारण है कि समर्पण होना ही चाहिए।

किस प्रकार का समर्पण : **"मैं क्यों झूठ बोलूं? झूठ बोलने की कोई आवश्यकता नहीं है।**

मैं यदि झूठ भी बोलूंगी तो मेरा (श्रीमाताजी) कहा हुआ तथाकथित असत्य भी सत्य हो जाएगा मेरी कही हुई बात कभी भी असत्य नहीं होती। किसी व्यक्ति के बारे में जब मैं कहती हूँ कि वह बुरा है तो कई बार आप कहते हैं, "श्रीमाताजी वह तो बहुत अच्छा आदमी है। आप कैसे उसके विषय में ऐसी बात कह रही हैं। हमारे पास ऐसा ही एक व्यक्ति श्री माइकल थे। "ओह, श्रीमाताजी वह इतना प्रिय व्यक्ति है। किसी ने कहा श्रीमाताजी क्या आपको उससे ईर्ष्या है? यहाँ तक कहा गया। परन्तु जब उसने अपने असली दाँत दिखाए तब लोगों को समझ में आया।

तो सत्य के विषय में इस प्रकार की सूझ-बूझ विकसित करने के लिए सर्वप्रथम आपको चाहिए कि **स्वयं को सत्य में स्थापित कर लें। और सत्य ये है कि आप परमात्मा के माध्यम हैं क्योंकि आपको आत्मसाक्षात्कार मिल चुका है। आपमें एक विशेष चेतना है जो लोगों में नहीं है। इस चेतना में बने रहें और इसका उद्घोष करें, दावा करें। इससे आपको भयभीत नहीं होना चाहिए।** निःसन्देह आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है। आप इसका अनुभव कर चुके हैं। इस बात को कहें कि मुझको आत्मसाक्षात्कार मिल चुका है। जो कुछ भी हो, मैं जानता हूँ मैं आत्मसाक्षात्कारी हूँ। इस पर दृढ़ हो जाएं।

सत्य की यह अभिव्यक्ति करते हुए आपको प्रकाश सम होना होगा। प्रकाश शक्तिपूर्वक स्वयं को प्रकट करता है। यह केवल अपनी शक्ति को ही प्रकट नहीं करता अन्य लोगों को दर्शाता भी है कि यह चमकता है। प्रकाश दर्शाता है कि "मैं प्रकाश हूँ" तथा **"आप मेरी रोशनी में चलो। यदि आप ऐसा करने का प्रयत्न नहीं करते तो मैं तुम्हें जला भी सकता हूँ।** उसमें वह तेजस्विता है, वह तेज है, प्रकाश का वह तीखापन है। प्रकाश की वह तेजस्विता व तीखापन। आपके सत्य का यही प्रमाण है। आपको न किसी मन्त्री का भय है न प्रधानमन्त्री का और

न सम्राट का, किसी का भी भय नहीं। परन्तु "यह वास्तविकता है। इस बात को मैं जानता हूँ।' मैं आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हूँ। मैं सत्य हूँ।" आप यदि कहेंगे कि "मैं सत्य हूँ तो वह सत्य हो जाएगा। इसमें कोई सन्देह नहीं है, जो भी कुछ आप करेंगे वह सत्य होगा। परन्तु कहें, "मैं सत्य हूँ।"

परन्तु इसके लिए स्वयं का सामना करने के लिए वास्तविक शुद्धीकरण आवश्यक है। **समर्पण का अर्थ है कि आप अपनी माँ से (श्रीमाताजी से), सहजयोग से और जिस सत्य को आपने प्राप्त किया है उससे दृढ़तापूर्वक जुड़े हुए हैं।** इसके बिना आप यह कार्य नहीं कर सकते क्योंकि यही आपका स्रोत है, आप सत्य पर खड़े हैं जिसमें महान शक्ति है, महान दृढ़ता है।

इन सभी लोगों में, ईसा मसीह में, मोहम्मद साहब में यह शक्ति थी। इन सभी महान अवतरणों में यह शक्ति थी। "पूर्ण साहस तथा बल के साथ सत्य को कहने की शक्ति ताकि लोग इसे स्वीकार कर लें। चाहे इसके लिए उन्हें कष्ट उठाने पड़े फिर भी उन्होंने इसका बुरा नहीं माना। सत्य जो है उसका कहा जाना आवश्यक है।"

समर्पण के विषय में पहली बात जो हमे समझनी है वह यह है कि-आप पूर्णत: समर्पित हैं, किसी का भय आपको नहीं है, अपनी हानियों की भी आपको चिन्ता नहीं है।

कुछ लोगों ने अपने प्राण दे दिए, अपने सिर कटवा लिए, लोगों ने उन्हें सताया। कुछ लोगों ने अपना सारा धन न्यौछावर कर दिया। सभी प्रकार से सताए गए परन्तु उन्होंने यही सोचा कि यही सत्य है और सत्य को नहीं छोड़ा। उनमें से कुछ लोग बलि के मूर्ख बकरे भी थे। वे असत्य के लिए न्यौछावर हो गए।

परन्तु अब आप जानते हैं कि आप सत्य पर खड़े हैं और सत्य के लिए आपको बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए। क्योंकि आप सत्य का बलिदान नहीं कर सकते। आप तो असत्य की बलि दे रहे हैं।

इसके लिए **आपको साहस एवं शक्ति से परिपूर्ण लोगों की आवश्यकता है, इन अधकचरे लोगों की नहीं जो सुबह से शाम तक श्रीमाताजी से क्षमा याचना ही करने में लगे रहते हैं। ये क्या है? क्षमा मांगने की क्या बात है? मैं तो तुम्हें हर क्षण क्षमा करती रहती हूँ। परन्तु आप क्या कर रहे हैं? आप कैसे व्यक्ति हैं?**

इस विषय में सोचें कि आपको सत्य पर खड़ा होना है। इसके लिए आपको साहसी एवं सशक्त होना पड़ेगा और आपमें वही तेजी होनी आवश्यक है। आपके अन्दर प्रकाश स्तम्भ के प्रकाश की तरह से तेजस्विता होनी चाहिए। परन्तु इसके साथ साथ पूर्ण समर्पण भी होना आवश्यक है। यदि इस लैम्प में तेल न हो तो यह बुझ जाएगा। इसमें तेल होना आवश्यक है अन्यथा यह बुझ जाएगा। अत: समर्पण भी आपमें इसी तेल की तरह से है। ये ही स्रोत से

आपको जोड़े हुए हैं। समर्पण का यही अर्थ है। **समर्पण से आपको कोई और अर्थ नहीं लगाना चाहिए सिवाय इसके कि यह प्रकाश है जो चमकता है, जो सुधारता है और अन्य लोगों का पथ प्रदर्शन करता है। यदि ऐसा नहीं है तो आपको अपने स्रोत से शक्ति पूरी तरह से प्राप्त नहीं हो रही और इसलिए आपकी ज्योति भी पूरी तरह से नहीं जल रही है। अतः जब आप समर्पित हो तो कभी न सोचें कि आप कुछ त्याग कर रहे हैं** जिसके कारण आप करम कल्ला (Cabbage) बन जाएं। लोग ऐसा ही सोचते हैं कि कर्म हीन बन जाओ। **इसके विपरीत समर्पण से आप प्रगल्भ (Dynamic) बन जाते हैं। आप वास्तविक शक्ति बन जाते हैं: विनाश की नहीं रचनात्मकता की।** कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि विध्वंस के लिए अधिक शक्ति की आवश्यकता नहीं होती। सृजन के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है। विनाश के लिए कितनी शक्ति की आवश्यकता होती है? बहुत कम। जरा सी देर में सभी कुछ नष्ट किया जा सकता है। परन्तु सृजन के लिए महान शक्ति की आवश्यकता होती है और वह शक्ति, वह सतत शक्ति, निरन्तर बहने वाली शक्ति होनी आवश्यक है। इसके लिए समर्पण आवश्यक है।

अपने शक्ति के स्रोत से जुड़कर आपको पूरी ताकत से खड़ा होना होगा। बिना किसी भय के। यही सत्य है। इसी सत्य को आपने प्राप्त करना है। यह बहुत महत्वपूर्ण है।

परन्तु यह इसका केवल एक पक्ष है जो कि पर्याप्त नहीं है। केवल सत्य बनने के लिए एक पक्ष है परन्तु इसका दूसरा पहलू यह है कि जब यह स्रोत आपके पास आता है तो आप करुणा बन जाते हैं। सत्य और करुणा एक ही चीज है। आप इस बात पर विश्वास नहीं करेंगे परन्तु यह सत्य है। जिस प्रकार प्रकाश बनने के लिए बत्ती और तेल को एकरूप होना पड़ता है और तेल के जलने से प्रकाश प्राप्त होता है। इसी प्रकार करुणा आपको सत्य प्रदान करती है। इसमें कोई अन्तर नहीं है। केवल अवस्था का अन्तर है। तेल जो कि प्रकाश है और जो जल रहा है उसे आप नहीं देख सकते।

अतः करुणा ही आपका स्रोत है तथा भण्डार भी। तो करुणा के इस स्रोत से आप करुणा प्राप्त करें।

मैंने ऐसे लोगों को देखा है जो मुझसे करुणा चाहते हैं। वे चाहते हैं कि मैं उनसे प्रेम करूं। **परन्तु इस पर यदि चिन्तन किया जाए तो क्या वे अन्य लोगों से इसी प्रकार प्रेम करते हैं?** मैं ऐसे लोगों को जानती हूँ जो दूसरों से कठोर शब्द बोलेंगे और फिर आकर मुझसे कहेंगे, "श्रीमाताजी मुझे क्षमा कर दीजिए।" या फिर मस्तिष्क की सनक के कारण कुछ कठोर करेंगे। "श्रीमाताजी मुझे क्षमा कर दीजिए। जब आप क्षमा मांगते हैं तो मैं जानना चाहूँगी कि क्या आपने अन्य लोगों के साथ करुणापूर्वक व्यवहार किया? मुझसे क्षमा प्राप्त करने के पश्चात् भी क्षमा के तथा करुणा के स्रोत से क्षमा प्राप्त करने

के पश्चात् भी, क्या आपने अन्य लोगों को करुणा दी? क्या आप अन्य लोगों के साथ करुणामय हैं? करुणा केवल एक ओर की नहीं होनी चाहिए। **आप यदि मेरी करुणा का लाभ उठा रहे हैं तो इसे केवल अपने हित के लिए उपयोग करके भूल न जाएं। ऐसा यदि आप करेंगे तो कभी आपका उत्थान नहीं हो सकेगा।**

आप उन्नत होना चाहते हैं तो अपने अन्दर उस करुणा को सहेज कर रखें। **जो भी करुणा, जो भी प्रेम मैंने आपको दिया है उसे सहेज कर रखें और अन्य लोगों को वो करुणा व प्रेम लौटाएं अन्यथा आप समाप्त हो जाएंगे, कहीं के न रहेंगे। स्थायी उन्नति तो तभी होगी जब आप एक ओर से करुणा एवं प्रेम लेकर दूसरी ओर से अन्य लोगों को देंगे। अन्यथा आप निस्तेज हो जाएंगे। करुणा बाहर की ओर बहनी चाहिए।**

परन्तु ये बहुत कठिन कार्य है। लोग श्रीमाताजी से करुणा प्राप्त करने में बहुत दक्ष हैं। वे यदि करुणामय हैं भी तो प्रायः वियतनाम के लोगों के प्रति करुणामय होंगे, अपने आश्रम के लोगों के प्रति नहीं। वियतनाम के लोगों के लिए वो बहुत चिन्तित हैं। कहेंगे," ओह श्रीमाताजी। हमें वियतनाम के लोगों की बहुत चिन्ता है। हम उनके लिए धन एकत्र कर रहे हैं और वियतनाम पैसा भेजने की कोशिश कर रहे हैं।" और यहाँ आश्रम में रहने वाले लोग आपस में झगड़ रहे हैं! यह किसी भी तरह से करुणा नहीं है।

परस्पर सहजयोगी एक भिन्न प्रजाति है। **हर समय एक दूसरे को आश्रय देना होगा और परस्पर देखभाल करनी होगी।** जब मैं सहजयोगियों को दूसरे सहजयोगियों की आलोचना करते हुए देखती हूँ तो मुझे हैरानी होती है क्योंकि आप एक ही विराट के अंग-प्रत्यंग हैं किस प्रकार आप आलोचना कर सकते हैं। एक आँख का दूसरी आँख का आलोचना करना मेरी समझ में नहीं आता। मैं तो आलोचना कर सकती हूँ, ठीक है; परन्तु आप क्यों आलोचना करें? क्यों आपको एक-दूसरे की आलोचना करनी चाहिए? **आपके करने के लिए केवल एक ही चीज़ है, परस्पर प्रेम करें।**

क्राइस्ट ने ये बात केवल तीन बार कही थी, मैं ये बात एक सौ आठ बार कह चुकी हूँ, "कि आपको परस्पर प्रेम करना है, केवल इसी तरह आप अपनी करुणा की अभिव्यक्ति कर सकते हैं। **मैंने यदि आपको कभी प्रेम किया है तो दूसरों के प्रति आपमें धैर्य एवं प्रेम होना चाहिए।** कई बार मैं लोगों को उकसाती हूँ और वे तुरन्त किसी न किसी की आलोचना करनी आरम्भ कर देते हैं।

मूल बात ये है कि **हमारे हृदय से करुणा यदि बह रही है केवल तभी हम श्रीमाताजी से करुणा प्राप्त कर सकते हैं।** कोई ऐसा स्थान नहीं है जहाँ पर मैंने करुणा वर्षा न की हो और अब मुझे लगता है कि जब तक आप इस करुणा को अन्य लोगों तक नहीं पहुँचाएंगे किस प्रकार मैं ये करुणा आपको देती

रहूंगी? इसे सम्भालने के लिए अब आपमें स्थान कहाँ बचा है। अच्छा होगा कि इसे बांट दें। अपने अन्दर को थोड़ा सा खाली कर दें ताकि मैं आपको और अधिक करुणा दे सकूं। यह बहुत सहज कार्य है इसके विषय में व्यक्ति को समझना चाहिए कि स्रोत से करुणा केवल तभी बह सकती है जब मार्ग पूर्णत: विस्तृत हो।

थेम्स नदी की तरह। हम इसके उद्गम स्थान को देखने के लिए गए। सात बहुत छोटी-छोटी धाराओं से निकलती हुई ये एक छोटी सरिता है जो बाद में थेम्स नदी बन गई है। यह यदि विस्तृत नहीं होती तो आरम्भ में ही रुक गई होती। यह न बाहर आ सकती न बह सकती। क्रोध या परेशानी के कारण ऐसा नहीं है परन्तु इसके स्वभाव के कारण ये न बह सकती। क्या करें?

अत: व्यक्ति को करुणा अन्य लोगों में बाँटनी ही होगी। करुणा बनावटी या अस्वाभाविक नहीं होनी चाहिए। इसे अत्यन्त नैसर्गिक और स्वैच्छिक होना चाहिए, अन्तर्भावना। यह आपके अहं, प्रतिअहं या भावनात्मकता की अभिव्यक्ति नहीं है। यह तो एक प्रकार की सूझ-बूझ है कि वह सहजयोगी है आप भी सहजयोगी हैं, अत: भाई हैं। आम भाईयों की तरह से नहीं, भिन्न प्रकार के आध्यात्मिक भाई हैं, आप आध्यात्मिक लोग हैं।

अत: करुणा होनी ही चाहिए। अन्य लोगों के लिए अत्यन्त भावपूर्ण मातृसम तथा पितृसम करुणा। मेरा कहने से अभिप्राय है कि मैं तो 108 वर्ष से भी वृद्ध व्यक्ति की माँ हूँ। वास्तव में आपको चाहिए कि अन्य लोगों को ममत्व प्रदान करें और उनके लिए आपके हृदय में गहन प्रेम एवं करुणा का भाव हो। अपनी सुख-सुविधा और लाभ के विषय में न सोचकर अन्य लोगों के हित के विषय में सोचना चाहिए। आपको सोचना होगा कि "लोगों को सुख पहुँचाने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ और उसके पश्चात् अपनी सुख-सुविधा के बारे में सोचना होगा।

करुणा का ये प्रवाह जब आरम्भ हो जाएगा तब समर्पण पूर्ण हो जाएगा। तब वह स्थिति होगी कि "श्रीमाताजी हमें आपको जो कृपा प्राप्त हो रही है वह हम दूसरे लोगों को भी दे रहे हैं। यही श्रद्धा है। तो श्रद्धा का ये प्रवाह एकतरफा नहीं है ये दोतरफा है। किसी चीज़ से आप जुड़ जाते हैं, उससे सम्बन्धित हो जाते हैं ताकि उससे कुछ प्राप्त करके अन्य लोगों को दे सकें। अन्तत: यह सामूहिक अस्तित्व तक पहुँच जाता है अर्थात् अपने स्रोत तक पहुँच जाता है। इस ज्योतिर्मय दृष्टिकोण से हमें समझना चाहिए।

एक विशिष्टता या "अब हमारा विवाह हो गया है, हमारे पास अलग स्थान होना चाहिए या अब हमें अलग रहना चाहिए।" यह सब ठीक है विवाहित होने पर आपको थोड़ी सी एकान्तता आवश्यक है। उसके विषय में मैं इन्कार नहीं कर रही। परन्तु जहाँ तक करुणा का सम्बन्ध है विवाहित लोगों को कहीं अधिक करुणामय होना होगा। परन्तु आप लोग तो केवल अपने बच्चों, अपनी सुख-सुविधाओं, अपने पति

और अपनी पत्नी के विषय में ही चिन्तित होते हैं। सहजयोग में ऐसे लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है। यह तो पूर्णत: सामूहिक है। जब आप अपने बच्चे के लिए मिठाई लाते हैं तो आश्रम के अन्य बच्चों के लिए भी मिठाई लाएं। आप एक परिवार हैं और पूरे परिवार को एक ही प्रकार की तरंगों के साथ चलना चाहिए। मैंने इससे पहले भी आपको बताया है कि हम अलग से खाने आदि का प्रबन्ध नहीं कर सकते। इसी प्रकार भिन्न लोगों के लिए हम जीवन के भिन्न स्तर नहीं बना सकते।

हम सबको उन्हीं चीज़ों का आनन्द लेना है जो सभी के लिए उपलब्ध है। ऐसा ही होना चाहिए। भौतिक स्तर पर यह उपलब्धि प्राप्त की जानी चाहिए। कोई विवाह यदि अटपटा है और जिसके कारण सभी लोगों को परेशानी होती है तो भावनात्मक स्तर पर यह बेकार है। विवाह तो सभी को सुख देने के लिए किए जाते हैं। अत: विवाह का निर्णय लेने से पूर्व सोचें कि आप चालाकी नहीं कर रहे हैं। सहजयोग में चालाकी करना बहुत भयानक है। आप केवल अपने विवाहों के मामले में ही चालाकी नहीं कर रहे हैं, आप किसी अन्य को भी अपने साथ लिप्त कर रहे है। ये सोचते हुए कि श्रीमाताजी आपको क्षमा कर देंगी, **मैं तो आपको क्षमा कर दूंगी परन्तु आपका उत्थान कठिन हो जाएगा।** अत: जैसे आप पहले करते थे, किसी भी मामले में चालाकी करने का प्रयत्न न करें। स्वयं को परिवर्तित करें, पूर्णत: परिवर्तित कर लें।

जीवन के प्रति अपना दृष्टिकोण बदल लें आप ऐसा कर सकते हैं क्योंकि आपका दृष्टिकोण तो बदल चुका है। अब यदि आप भिन्न व्यक्ति बनने का प्रयत्न करेंगे तो न बन सकेंगे। अब आप पुष्प बन चुके हैं, अचानक पत्ता नहीं बन सकते। अब पुष्प हैं और पुष्प सम आपको रहना होगा।

यही आपको याद रखना है कि करुणा ऐसा प्रवाह है, सहजयोगी के लिए यह अत्यन्त स्वाभाविक गुण है। किसी अन्य के लिए यह स्वाभाविक नहीं है। करुणा आदि की बात करने वाले अन्य लोग वास्तव में बिल्कुल भी करुणामय नहीं होते। वे तो धन, पदवी, अहं सन्तुष्टिकरण आदि के लिए करुणा की बातें करते हैं। परन्तु आप में करुणा है इसलिए आप करुणा की बात करते हैं। करुणा आपसे प्रवाहित हो रही है और आप करुणा कर रहे हैं। इसके पीछे कोई अन्य ध्येय नहीं है। केवल इसी प्रकार आपको स्थायी करुणा प्राप्त होगी।

जैसा आज सुबह मैं आपको बता रही थी आप लोग एक संस्था में गए और इसे बहुत सुन्दर बना दिया। परन्तु उनके जाते ही संस्था समाप्त हो जाती है क्योंकि वे संस्था को कुछ विशेष दे नहीं पाते। **दिया क्या जाना चाहिए? करुणा से परिपूर्ण विशाल हृदय।** यदि आप यह नहीं दे पाते तो आपके जाते ही सभी कुछ बंजर हो जाता है। ये उत्थान नहीं है। पानी लाकर यदि आप पौधे में और पृथ्वी में दें और सींचे तो ये बहुत सुन्दर हो जाती है। और आप कह

सकते हैं बहुत ही सुन्दर हरियाली है। जल का स्रोत यदि हटा लिया जाए तो ये सूख जाती है।

परन्तु सहजयोग भिन्न है। सहजयोग में आप पौधे की तरह से केवल बढ़ते ही नहीं। पौधे की ऊर्जा स्रोत के रूप में, विकसित होते हैं। इस पौधे को यदि यहाँ से उखाड़ कर कहीं ओर लगा दिया जाए तो ये अन्य पौधों को भी सींचेगा। यह नया आयाम आपने अपने अन्दर पा लिया है तथा आप इसके विषय में जानते हैं? एक बार जब इस पौधे को उखाड़ कर बाहर ले जाया जाएगा तो भी ये मरेगा नहीं। बिल्कुल भी नहीं। यह स्वयं तो बढ़ेगा ही अन्य पौधों को भी बढ़ाएगा। हमारे अन्दर यह एक अन्य प्रकार का विकास हुआ है और अब हम बिल्कुल भिन्न स्थिति में हैं और यही स्थिति मैं चाहती हूँ कि चाहे आपको अपने स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगा दिया जाए...मैंने देखा है कि जब मैं लोगों से कहती हूँ कि ये स्थान छोड़कर वहाँ चले जाओ तो वे डर जाते हैं। "बेहतर होगा कि आप वहाँ जाकर ये कार्य करें और वे डर जाते हैं। आप ऐसे पौधे हैं जो कहीं भी जाकर फल-फूल सकते हैं। केवल इतना ही नहीं अन्य लोगों को भी पोषण प्रदान कर सकते हैं। आपमें वास्तव में ये शक्ति है। अत: एक ही स्थान से चिपके न रहें। एक ही स्थान से यदि आप लिप्त हैं तो सोचें कि वहाँ कुछ न कुछ कमी अवश्य होगी। ये बहुत भयानक है। स्मरण रहे कि कोई भी स्थान जो आपको पकड़े उससे भाग खड़े हों। मेरा कहने का ये भी अर्थ नहीं है कि, जैसे कुछ लोग यहाँ करते हैं, आप कभी घर पर न रुकें, हर वक्त दौड़ते रहें। मेरे कहने का ये अर्थ बिल्कुल भी नहीं है। ये बात मुझे पुन: बतानी पड़ रही है अन्यथा ये लोग हर वक्त दौड़ते ही रहेंगे। मेरा कहने का ये मतलब नहीं है।

मेरा ये अभिप्राय है कि हर वक्त किसी एक चीज़ से चिपके न रहें किसी स्थान को छोड़ने से घबराएं नहीं। क्योंकि अब आप सहजयोगी हैं। आप समुद्र में प्रवेश कर गए हैं और समुद्र आपको कहीं भी ले जा सकता है।

तो कहीं भी जाने के लिए स्वयं को तैयार करें क्योंकि आपने ये करुणा सर्वत्र फैलानी है और समृद्ध होना है। परमात्मा के इस साम्राज्य में आपने परमात्मा की सेवा करनी है। ये सेवा तभी सम्भव है जब आपको इस बात का ज्ञान हो कि इस महान सार्वभौमिक कार्य के लिए आप यहाँ हैं। केवल इंग्लैण्ड, भारत या अमेरिका के लिए ही नहीं परन्तु एक सार्वभौमिक कार्य के लिए जो कि हमारे विकास का सारांश है। अपनी सृष्टि और सृष्टा के लिए यह सबसे बड़ा कार्य है जो हमें करना है। आपको इस कार्य के लिए चुना गया है। **कोई भी चीज़ जो आपकी अभिव्यक्ति को पूर्ण नहीं करती उसकी तरफ अपना चित्त न जाने दें। ऐसी सब चीज़ों को त्याग दें, अपनी शक्ति को बर्बाद न करें।** आपकी करुणा, आपका प्रेम ही आपकी अभिव्यक्ति है।

परन्तु अब भी ये केवल तर्कसंगत ही न

रह जाए। **मैंने जो कुछ भी आपसे कहा है, वह आपको ऐसी स्थिति में लाने के लिए है जिसमें आप चैतन्य लहरियाँ आत्मसात करने लगें और चैतन्य लहरियाँ दें। यह एक क्रिया है, एक घटना है जो आपके अन्दर घटित होना चाहिए।** यह तार्किकता नहीं है, इसके विषय में सोच नहीं है। ये चीजें कहने मात्र से मैं आपकी सोच को अभिभूत कर रही हूँ। आप अपने साथ ये घटित होने दें। केवल चैतन्य चेतना से स्वयं को परखें। **"क्या, मैं अन्य लोगों को चैतन्य लहरियाँ दे रहा हूँ? क्या मैंने अपने में चैतन्य लहरियों का भण्डार भर लिया है या मैं स्वयं को नष्ट कर रहा हूँ?** ये सब आपको एक विशेष अर्थ तथा व्यवसाय प्रदान करेगा। जैसा मैंने कहा, "परमात्मा की नौकरी।"

परमात्मा आपको धन्य करें।

मानवीय चेतना महत्वपूर्णतम है। इसका सम्मान होना ही चाहिए।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी

गणेश पूजा कबैला 16.9.2000

परमाणु जब फटता है तो कितने विध्वंस का कारण बनता है, परन्तु मानव हृदय जब खुलता है तो उससे कितनी प्रेम सरिताएं निकलती हैं। ये सरिताएं प्रेम सागर की सृष्टि करती हैं।

सहज सामूहिकता का प्रेम अपने ही अन्दर सीमित नहीं रह सकता। विस्तृत होकर इसे समाज तक पहुँचना होता है। अन्य लोगों, समाज तथा मानवीय समस्याओं के प्रति अपनी चिन्ता को यह अभिव्यक्ति करता है। यह चिन्ता प्रेम का आंदोलन है जिसे करुणा की संज्ञा दी जाती है। करुणा साक्षात् देवी श्री माताजी के हृदय से बहती है। सामूहिक करुणा के रूप में देवी की पूजा होती है।

उनकी करुणा प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है। अब हमें उनकी करुणा का माध्यम बनना है। अपनी दिव्य करुणा में उन्होंने दीन-दुखियों के लिए कई कार्य शुरू किए हैं। हाल ही में उन्होंने निराश्रय महिला तथा बालगृह की नींव रखी है। इस अवसर पर उनके हृदयस्पर्शी प्रवचन को सुनकर सबकी आंखों में करुणा के आंसू बह निकले। इन महिलाओं तथा बच्चों के लिए उनके हृदय की पीड़ा से हमारे हृदय कराह उठे। हम सब उस पीड़ा को दूर करने का वचन देते हैं।

करुणा का आंदोलन हमें अत्यधिक गहनता में ले जाता है। परहित की ओर जब हमारा चित्त जाता है तो अपने विषय में हमारी सोच कम हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप अहम् को मिलने वाला ईंधन कम हो जाता है और अहम् घटने लगता है। हमारे विचार भी हितकर हो जाते हैं। उदाहरण के रूप में पिछली दिवाली हमने पांच सौ रुपये के पटाखे जलाए थे। इस दीवाली पर विचार आया कि क्यों न आधे पैसे गलियों में चलने वाले बच्चों की इस संस्था को दे दिए जाएं। हो सकता है किसी दिन निराश्रित बच्चे देवी लक्ष्मी के सम्मान में दीप जलाने के योग्य हो जाएं।

परहित की ये भावना आन्तरिक आनन्द भी प्रदान करती है। इसी प्रकार ज्योत से ज्योत जलती चली जाएगी। गलियों में भटकने वाले, गलियों के अंधेरों के भयानक बीहड़ में खोए हुए इन निराश्रित बच्चों को आत्मसाक्षात्कार भी प्राप्त नहीं हो सका है। हमारी आकांक्षा है कि आत्मा का ये प्रकाश उन्हें साक्षात् श्री महालक्ष्मी श्री आदिशक्ति माताजी श्री निर्मला देवी के चरण कमलों तक ले जाए।

तो आइए हम सब भी अपनी परमेश्वरी माँ द्वारा आरम्भ किए गए इस यज्ञ में उत्साहता पूर्वक योगदान दें।